प्रयागराज, रविवार 07 जून 2026 से 13 जून 2026 तक
वर्ष-14, अंक-23
पृष्ठ- 8 मूल्य: 3 रूपये

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार
हिन्दी साप्ताहिक

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

कुवैत पर ईरानी हमले से नाराज़ खाड़ी देश, कहा- ऐसे कायराना हमले से तनाव बढ़ा

ट्रम्प बोले- ईरान पर अटैक मेरा फैसला

तेहरान। खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) ने बुधवार को कुवैत और बहरीन पर हुए हमलों को लेकर ईरान की कड़ी आलोचना की। संगठन ने इन हमलों को कायराना बताते हुए कहा कि इससे क्षेत्र में तनाव और बढ़ गया है। जीसीसी के महासचिव जासिम मोहम्मद अलबुदैवी ने कहा कि ईरान लगातार ऐसे कदम उठा रहा है जो खाड़ी देशों की सुरक्षा, स्थिरता और संप्रभुता के लिए खतरा हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि ईरान के हालिया हमले अंतरराष्ट्रीय कानून, संयुक्त राष्ट्र के नियमों और अंतरराष्ट्रीय मानकों का उल्लंघन हैं। ऐसे कदमों को रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय को सख्त रुख अपनाना चाहिए। खाड़ी सहयोग परिषद यानी जीसीसी में कुवैत, कतर, सऊदी अरब, बहरीन, ओमान और यूएई शामिल हैं। वहीं, अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने कहा कि ईरान के खिलाफ कार्रवाई का फैसला उन्होंने खुद लिया था। उन्होंने इस बात से इनकार किया कि इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने उन्हें ऐसा करने के लिए प्रभावित किया था। एक पॉडकास्ट में बातचीत के दौरान ट्रम्प ने कहा, किसी ने मुझे बहकाया नहीं। यह फैसला मेरा अपना था। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स-1. कुवैत एयरपोर्ट पर ईरानी ड्रोन-मिसाइल हमलाः हमले में 1 भारतीय की मौत हुई, 63 लोग घायल हुए। एयरपोर्ट को नुकसान पहुंचा और उड़ानें अस्थायी रूप से रोकनी पड़ीं। 2. ईरान ने कुवैत और बहरीन को चेतावनी दीः तेहरान ने कहा कि अगर किसी देश की जमीन का इस्तेमाल ईरान पर हमले के लिए हुआ तो वह जवाबी कार्रवाई करेगा। 3. ट्रम्प ने कहा- ईरान ने परमाणु हथियार नहीं बनाने की शर्त मानीः अमेरिकी राष्ट्रपति का दावा है कि प्रस्तावित समझौते में ईरान परमाणु बम नहीं बनाने का वादा करेगा। 4. नेतन्याहू पर ट्रम्प भड़के, 'पागल' तक कहाः रिपोर्ट के मुताबिक लेबनान में इजराइली हमलों और बढ़ते तनाव को लेकर ट्रम्प ने नेतन्याहू से नाराजगी जताई। 5. लेबनान में इजराइली सैन्य कार्रवाई तेजः हिजबुल्लाह ने 13 हमलों का दावा किया, जबकि इजराइल ने कई इलाकों पर हवाई हमले किए और लोगों को घर खाली करने के आदेश दिए। उत्तरी इजराइल के कफर युवाल इलाके में गुरुवार सुबह ड्रोन घुसपैठ की आशंका के बाद सायरन बजाए गए। इलाके में कुछ समय के लिए अलर्ट जारी रहा। इजराइली सेना के मुताबिक, चेतावनी मिलने के बाद सुरक्षा एजेंसियों ने निगरानी बढ़ाई और स्थिति की जांच की। बाद में सेना ने कहा कि किसी तरह का नुकसान या हताहत नहीं हुआ।

होर्मुज संकट के बीच वेनेजुएलाई राष्ट्रपति भारत आई, पीएम मोदी से मिलीं- तेल सप्लाई पर बड़ा समझौता संभव

नयी दिल्ली। वेनेजुएला की कार्यवाहक राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिगेज ने बुधवार को पीएम मोदी से मुलाकात की। यह मुलाकात ऐसे समय हुई है जब भारत और वेनेजुएला के बीच ऊर्जा सहयोग तेजी से बढ़ा है। माना जा रहा है कि दोनों देशों के बीच तेल सप्लाई को लेकर बड़ा समझौता हो सकता है। इससे पहले विदेश मंत्री जयशंकर ने भी डेल्सी रोड्रिगेज से मुलाकात की थी। उन्होंने कहा कि भारत-वेनेजुएला संबंधों को मजबूत करने में रोड्रिगेज की लंबे समय से महत्वपूर्ण भूमिका रही है और प्रधानमंत्री मोदी के साथ उनकी बातचीत दोनों देशों के सहयोग को और आगे बढ़ाएगी। अमेरिका ने 4 जनवरी को तत्कालीन राष्ट्रपति निकोलस मादुरो का तख्तापलट कर दिया था। इसके बाद से रोड्रिगेज कार्यवाहक राष्ट्रपति हैं। रोड्रिगेज की भारत यात्रा ऐसे समय हो रही है, जब भारत ऊर्जा सुरक्षा से जुड़ी नई चुनौतियों का सामना कर रहा है। होर्मुज संकट की वजह से भारत वैकल्पिक आपूर्तिकर्ताओं की तलाश कर रहा है। एनर्जी ट्रैक करने वाली एजेंसी केप्लर के डेटा के मुताबिक, मई 2026 में वेनेजुएला ने तेल सप्लाई के मामले में सऊदी अरब और अमेरिका को पीछे छोड़ दिया है। अभी केवल रूस और यूएई ने ही उससे ज्यादा तेल सप्लाई किया है। रिपोर्ट के मुताबिक, इस महीने भारत को वेनेजुएला से होने वाली तेल सप्लाई अप्रैल के मुकाबले करीब 50 फीसदी बढ़ गई है। अमेरिका ने जनवरी में वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को पकड़ने के बाद वहां के तेल निर्यात पर कुछ ढील दी थी। उसी के बाद अप्रैल से भारत में फिर से वेनेजुएला का तेल आना शुरू हुआ। करीब 303 अरब बैरल तेल भंडार के साथ वेनेजुएला दुनिया का सबसे बड़ा तेल भंडार वाला देश माना जाता है। यह भंडार सऊदी अरब और अमेरिका से भी ज्यादा है। अब अमेरिका और वेनेजुएला दोनों कोशिश करेंगे कि भारत के साथ ऐसा समझौता हो, जिससे वेनेजुएला से तेल निर्यात में आई यह तेजी आगे भी जारी रह सके। वेनेजुएला भारत के बड़े तेल सप्लायर्स में शामिल रहा है। 2012 में यह भारत का तीसरा सबसे बड़ा तेल सप्लायर बना था और कई साल तक टॉप-5 में रहा। 2019 तक वेनेजुएला हर साल करीब 1.6 करोड़ टन कच्चा तेल भारत भेज रहा था। उसी दौरान दोनों देशों का व्यापार बढ़कर 6.4 अरब डॉलर पहुंच गया था, जिसमें सबसे बड़ा हिस्सा तेल कारोबार का था। हालांकि, अमेरिका की तरफ से वेनेजुएला के तेल खरीदारों पर लगाए गए प्रतिबंधों के कारण भारत ने करीब एक साल तक वहां से तेल खरीद बंद कर दी थी। 2024-25 में दोनों देशों के बीच कुल व्यापार घटकर 67.9 करोड़ डॉलर रह गया। वेनेजुएला का कच्चा तेल भारी और ज्यादा सल्फर वाला होता है। इसे प्रोसेस करना आसान नहीं माना जाता। हालांकि, भारत की आधुनिक रिफाइनरियां इस तरह के तेल को डीजल और जेट फ्यूल जैसे उत्पादों में बदल सकती हैं। यह तेल तुलनात्मक रूप से सस्ता भी पड़ता है। इसी वजह से भारतीय रिफाइनरियां इसे आर्थिक रूप से फायदे का सौदा मानती हैं। वहीं, विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि वेनेजुएला भारत के लिए एक महत्वपूर्ण ऊर्जा साझेदार है।

मुकेश अंबानी से आगे निकले टिकटॉक के सह-संस्थापक यिमिंग, एशिया के दूसरे सबसे अमीर व्यक्ति बने, अंबानी खिसके तीसरे नंबर पर

मुंबई। टिकटॉक की पैरेंट कंपनी बाइडांस के को-फाउंडर झांग यिमिंग मुकेश अंबानी को पीछे छोड़कर एशिया के दूसरे सबसे अमीर व्यक्ति बन गए हैं। ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स इंडेक्स के मुताबिक, झांग की संपत्ति अब 8.9 लाख करोड़ रुपए (93 बिलियन डॉलर) हो गई है। वहीं, रिलायंस इंडस्ट्रीज के सीएमडी मुकेश अंबानी की संपत्ति 8.31 लाख करोड़ रुपए (86 बिलियन डॉलर) रह गई है। ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स इंडेक्स के अनुसार एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति अडाणी ग्रुप के मालिक गौतम अडाणी हैं। एआई चैटबॉट डौबाओ के सफलता से बढ़ी झांग की दौलत- झांग की दौलत बाइडांस की वैल्यूएशन बढ़ने और एआई चैटबॉट डौबाओ की सफलता से बढ़ी है। यह भारत और दुनियाभर में मशहूर ओपनएआई के चैटजीपीटी और गूगल के जेमिनाई जैसा ही एडवांस्ड एआई असिस्टेंट है। चीन में इस चैटबॉट के 30 करोड़ यूजर्स हैं। 7 सालों में 7 गुना बढ़ी संपत्ति-झांग 2019 में 1.24 लाख करोड़ रुपए की संपत्ति के मालिक थे। बीते 7 साल में उनकी संपत्ति सात गुना ये ज्यादा बढ़ चुकी है। अमेरिका में टिकटॉक का बिजनेस बिकने से कंपनी का संकट दूर हो गया। ब्लूमबर्ग ने इसकी वैल्यू में 25फीसदी कटौती घटाकर 10फीसदी कर दी है। इससे ब्लैकरॉक और फिडेलिटी जैसे निवेशकों के विश्लेषण के बाद झांग की संपत्ति 2.30 लाख करोड़ रुपए बढ़ी है। कंपनी एआई सेक्टर में इस साल 6.7 लाख करोड़ रुपए खर्च करेगी। बहरहाल, गौतम अदाणी 11.19 लाख करोड़ रुपए की संपत्ति के साथ एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति हैं। इलॉन मस्क दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति-दुनिया के सबसे अमीर शख्स इलॉन मस्क की कुल संपत्ति 69 लाख करोड़ रुपए (726 बिलियन डॉलर) है। वहीं इस मामले में दूसरे नंबर पर गूगल के फाउंडर लैरी पेज और तीसरे पर लैरी एलिशन हैं।

मौत के 4 महीने बाद होगा खामनेई का अंतिम संस्कार,ईरान के मशहद शहर में सुपुर्द-ए-खाक किया जाएगा-2 करोड़ लोग जनाजे में हो सकते हैं शामिल

तेहरान। ईरान के सुप्रीम लीडर रहे अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत के लगभग चार महीने बाद उन्हें दफनाया जाएगा। खामेनेई को उनकी अंतिम इच्छा के मुताबिक मशहद शहर में शिया इस्लाम के चर्चित इमाम रजा के पवित्र दरगाह परिसर के पास दफनाया जाएगा। इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) के मुताबिक खामेनेई को 21 जून के आसपास आखिरी विदाई दी जा सकती है। 28 फरवरी को तेहरान में उनके आवास पर हुए अमेरिका-इजराइल के हमले में उनकी मौत हो गई थी। उनका राजकीय अंतिम संस्कार पहले 4 मार्च को होने वाला था, लेकिन युद्ध की वजह से इसे टाल दिया गया था। अधिकारियों को उम्मीद है कि तेहरान, कुम और मशहद में होने वाले अंतिम संस्कार कार्यक्रमों में करीब 2 करोड़ लोग शामिल हो सकते हैं। लोगों को अंतिम दर्शन और श्रद्धांजलि देने के लिए पूरे तीन दिन निर्धारित किए गए हैं। खामेनेई का मुख्य अंतिम संस्कार समारोह तेहरान में होगा, जो कम से कम 24 घंटे तक चलने की उम्मीद है। इसके बाद पार्थिव शरीर को धार्मिक शहर कुम ले जाया जाएगा और फिर मशहद पहुंचाया जाएगा, जहां इमाम रजा के दरगाह परिसर में दफनाया जाएगा। तेहरान नगर निगम के एक अधिकारी ने बताया कि दफन से पहले खामेनेई के पार्थिव शरीर को कुम और मशहद की सड़कों पर अंतिम यात्रा के रूप में ले जाया जाएगा। यह जानकारी आईआरजीसी के एक बयान में दी गई। अगर खामेनेई के जनाजे में वास्तव में 2 करोड़ लोग पहुंचते हैं, तो यह इस्लामिक गणराज्य के संस्थापक अयातुल्ला रुहोल्लाह खोमैनी के 1989 वाले रिकॉर्ड से कहीं बड़ा आयोजन होगा। 1989 में अयातुल्ला रुहोल्लाह खोमैनी के जनाजे में करीब 1 करोड़ (10 मिलियन) लोग शामिल हुए थे। यह उस समय ईरान की कुल आबादी का लगभग छठा हिस्सा था। इस कार्यक्रम को आज भी दुनिया के सबसे बड़े जनाजों में गिना जाता है। इतनी भारी भीड़ उमड़ी थी कि भगदड़ मच गई थी, जिसमें कम से कम 8 लोगों की मौत हो गई थी और हजारों लोग घायल हुए थे। इस बार अधिकारी इससे भी बड़ी भीड़ को संभालने और किसी हादसे से बचने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन युद्ध के प्रभाव से उबर रहे देश में इतना बड़ा आयोजन कराना बड़ी चुनौती माना जा रहा है। अयातुल्ला अली खामेनेई की अंतिम संस्कार में हुई देरी इस्लामी परंपरा के लिहाज से असामान्य मानी जा रही है। आमतौर पर इस्लाम में किसी व्यक्ति को मौत के एक-दो दिन के भीतर दफना दिया जाता है। हालांकि ईरानी अधिकारियों के मुताबिक, भारी भीड़ की उम्मीद और युद्ध के हालात के कारण अंतिम संस्कार में देरी हुई। तेहरान नगर निगम में सामाजिक और सांस्कृतिक मामलों के उपप्रमुख मोहम्मद अली तवक्कोलीजादेह ने अंतिम संस्कार की तैयारियों की जानकारी दी। उन्होंने सरकारी टेलीविजन से कहा कि खामेनेई के लिए तीन दिन का सार्वजनिक जनाजा आयोजित किया जाएगा। अधिकारी ने यह नहीं बताया कि जनाजा कब होगा, लेकिन कहा कि यह इस्लामी कैलेंडर के पहले महीने मुहर्रम की शुरुआत में हो सकता है, जो 21 जून के आसपास में पड़ता है।

भारतीय सामानों पर 12.5फीसदी तक एक्सट्रा टैरिफ लग सकता है,अमेरिका ने 54 देशों पर जबरन मजदूरी का आरोप लगाया

नयी दिल्ली। अमेरिका ने भारत समेत दुनिया की 54 अर्थव्यवस्थाओं को ऐसी लिस्ट में रखा है, जो जबरन मजदूरी से बने सामानों के आयात को रोकने में नाकाम रही हैं। इस आधार पर अमेरिका ने अतिरिक्त कस्टम ड्यूटी लगाने का प्रस्ताव रखा है। सवाल 1: अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि (यूएसटीआर) की रिपोर्ट में भारत को लेकर क्या कहा गया है? जवाबः यूएसटीआर ने 'सेक्शन 301' के तहत की गई जांच के नतीजे जारी किए हैं। इसमें भारत समेत दुनिया की 54 अर्थव्यवस्थाओं के नाम है। अमेरिका का आरोप है कि इन देशों में फोर्स्ड लेबर की व्यवस्था को रोकने के लिए पर्याप्त और प्रभावी कानूनी उपाय मौजूद नहीं हैं।सवाल 2: अमेरिका ने इन देशों के सामान पर कितना एक्स्ट्रा टैरिफ लगाने का प्रस्ताव दिया है? जवाबः यूएसटीआर ने अपनी रिपोर्ट के आधार पर प्रभावित देशों से आने वाले सामानों पर 10फीसदी से लेकर 12.5फीसदी तक अतिरिक्त टैरिफ लगाने का प्रस्ताव रखा है। 10फीसदी एक्स्ट्रा टैक्सः जिन देशों ने नियम को थोड़ा-बहुत लागू कर रखा है या जो भरोसा दे रहे हैं कि वे आगे चलकर इसे मान लेंगे, उनके सामान पर 10फीसदी अतिरिक्त टैक्स लगेगा। 12.5फीसदी एक्स्ट्रा टैक्सः जो देश अमेरिका के इस नियम को बिल्कुल भी नहीं मान रहे हैं और जहां कोई तैयारी नहीं है, उनके सामान पर अमेरिका 12.5फीसदी का अतिरिक्त टैक्स लगाएगा। सवाल 3: इस पूरे मामले पर अमेरिकी प्रशासन का क्या स्टैंड है और उन्होंने क्या बयान दिया है? जवाबः अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि एंबेसडर जेमिसन ग्रीर ने कहा, 'हमारे सबसे महत्वपूर्ण कारोबारी साझेदारों के जबरन श्रम से बने सामानों के आयात पर रोक न लगाना पूरी तरह से अस्वीकार्य है। इसकी वजह से ऐसी स्थिति बनती है जहां अमेरिकी वर्कफोर्स को वैश्विक स्तर पर एक असमान मैदान में प्रतिस्पर्धा करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। अमेरिका ने संकेत दिया है कि वह इस जांच के निष्कर्षों के आधार पर जवाबी व्यापारिक कार्रवाई आगे बढ़ाएगा। सवाल 4: यह 'सेक्शन 301' क्या है, जिसके तहत अमेरिका यह कार्रवाई कर रहा है? जवाबः सेक्शन 301 अमेरिका के 'ट्रेड एक्ट ऑफ 1974' का एक विशेष प्रावधान है। यह कानून फीसदी को विदेशी सरकारों की उन व्यापारिक नीतियों की जांच करने का अधिकार देता है जो अमेरिकी व्यापारिक हितों के लिए गलत हों। अगर जांच में कोई देश दोषी पाया जाता है तो अमेरिकी प्रशासन को उस देश के खिलाफ ज्यादा टैरिफ लगाने या अन्य व्यापारिक प्रतिबंध लगाने का कानूनी अधिकार मिल जाता है। सवाल 5: भारत के अलावा इस लिस्ट में और कौन-कौन से प्रमुख देश शामिल हैं? जवाबः यूएसटीआर ने कुल 54 देशों को इस मुख्य लिस्ट में शामिल किया है। इनमें भारत के अलावा चीन, ब्राजील, यूनाइटेड किंगडम, जापान, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका और थाईलैंड जैसे बड़े नाम शामिल हैं। इसके अलावा छह अन्य अर्थव्यवस्थाओं- कनाडा, यूरोपीय संघ, मैक्सिको, पाकिस्तान, इंडोनेशिया और इक्वाडोर को भी कानून को सही ढंग से लागू न करने की श्रेणी में रखा गया है। सवाल 6: इस घोषणा का समय भारत के लिए क्यों संवेदनशील है?जवाबः यह टाइमिंग इसलिए बेहद संवेदनशील है क्योंकि अमेरिकी व्यापार अधिकारियों का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल इस समय नई दिल्ली में है।

13 साल उम्र,3 साल में 700 लोगों ने रेप किया,ब्रिटेन की संसद में ग्रूमिंग गैंग पीड़ितों की गवाही

ज्यादातर आरोपी पाकिस्तान मूल के

लंदन। ब्रिटिश सांसद रूपर्ट लोव ने संसद में अपने एक भाषण से ब्रिटेन के ग्रूमिंग गैंग कांड पर फिर से बहस छेड़ दी है। उन्होंने इस भाषण में पीड़ितों की गवाही पढ़ी। उन्होंने संसद को बताया कि रेप गिरोह की दो हफ्तों की जांच की सुनवाई के दौरान जो बातें कही गईं, उसे पूरी दुनिया को सुननी चाहिए। उन्होंने दावा किया कि एक पीड़ित से 13 से 16 साल की उम्र के बीच 600-700 अलग-अलग पुरुषों ने रेप किया। लोव ने कहा, ब्रिटेन के कम से कम 85 इलाकों में संगठित बाल यौन शोषण के संकेत मिले हैं। संसद में पढ़ी गई गवाहियों में सामूहिक दुष्कर्म, हिंसा, धमकी और नस्लीय अपमान के आरोप शामिल थे। एक गवाही में कहा गया कि पीड़ित को ड्रग्स देकर कई लोगों के हवाले किया जाता था। उन्हें पिंजरों में कैद रखा जाता था। दूसरी पीड़ित ने आरोप लगाया कि विरोध करने पर जान से मारने और परिवार को नुकसान पहुंचाने की धमकी दी जाती थी। रूपर्ट लोव ने कहा- अब इन मामलों पर चुप नहीं रहा जा सकता। पिछले साल अगस्त में लोव ने कहा था कि रेप कांड में मुख्य रूप से पाकिस्तानी मूल के पुरुष शामिल हैं। ये दशकों से गैंग चला रहे हैं और इनकी संख्या अनुमान से कहीं ज्यादा हैं। सांसद ने कई रेप विक्टिम की आपबीती सुनाई, 5 किस्सेः- लोव के संसद में दिए भाषण के मुताबिक, एक पीड़ित ने कहा- आरोपी ने अपनी पैंट उतारी, मेरा रेप किया। फिर उसने एक खाली बोतल उठाई और उसे जबरदस्ती मेरे प्राइवेट पार्ट के अंदर डाल दिया और बोतल का शीशा तोड़ दिया। उस समय मेरी उम्र लगभग 12 या 13 साल थी। लोव ने एक और पीड़ित की कहानी बताई। पीड़ित ने कहा- उन पुरुषों ने मुझे पकड़ रखा था और बारी-बारी से मेरे साथ रेप किया, मेरे हाथ-पैर भी दबाए रखे। उन्होंने मुझे बार-बार पीटा, किसी को घटना के बारे में बताने पर जान से मारने और परिवार को नुकसान पहुंचाने की धमकी दी। जांच के दौरान एक पीड़ित ने कहा- आरोपी लगातार ऐसे कमेंट करते थे, जिनसे लगता था कि वे श्वेत और ईसाई लड़कियों को कम नैतिक या निचले दर्जे वाली मानते थे। कुछ पुरुष मुस्लिम लड़कियों को इज्जतदार और उच्च मूल्यों वाली बताते थे। इस तरह वे हमारे साथ किए व्यवहार को सही ठहराते थे। ब्रिटिश सांसद ने एक और महिला की कहानी बताते हुए दावा किया कि उसके साथ रेप करने वाले आरोपी पुलिस अधिकारी थे। गवाही में कहा गया- देश के अलग-अलग हिस्सों में कई पुलिस अधिकारियों ने मेरा रेप किया। ब्रिटेन में, 'ग्रूमिंग गैंग' शब्द का इस्तेमाल आमतौर पर उन मामलों के लिए किया जाता है जिनमें बच्चों और किशोरियों का यौन शोषण या उन्हें प्रताड़ित किया जाता है। ग्रूमिंग गैंग शब्द रोदरहम, रोशडेल और ओल्डहैम जैसे शहरों में हुई जांचों के बाद प्रचलित हुआ। एक पीड़ित ने अपनी गवाही में कहा- यह तब शुरू हुआ जब मैं 13 साल की थी। तीन साल में लगभग छह या सात सौ अलग-अलग पुरुषों ने मेरा रेप किया। एक पीड़ित के मुताबिक, जब वह अस्पताल गई तो वहां कर्मचारियों को आपबीती बताई, लेकिन उन्होंने कोई सवाल नहीं पूछा और दवाई देकर छुट्टी दे दी।

दिल्ली की होटल में आग पर वर्ल्ड मीडिया-अलजजीरा ने लिखा- भारतीय इमारतों में सुरक्षा इंतजाम नहीं, बीबीसी-नियमों की अनदेखी से हादसा

नयी दिल्ली। दिल्ली के मालवीय नगर स्थित फ्लरिश स्टे होटल में बुधवार सुबह लगी भीषण आग ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी ध्यान खींचा है। हादसे में 21 लोगों की मौत हुई है, जिनमें 17 विदेशी नागरिक शामिल बताए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने घटना पर दुख जताते हुए मृतकों के परिजनों के लिए 2 लाख रुपये और घायलों के लिए 50 हजार रुपये की सहायता राशि की घोषणा की है। हादसे की गंभीरता और बड़ी संख्या में विदेशी नागरिकों की मौत के कारण दुनिया के कई प्रमुख मीडिया संस्थानों ने इसे प्रमुखता से कवर किया है। ब्रिटेन, जर्मनी, अमेरिका और अन्य देशों के मीडिया ने अपनी रिपोर्टों में दिल्ली के होटल में लगी आग, बचाव अभियान और विदेशी नागरिकों की मौत पर फोकस किया है। दक्षिण दिल्ली के मालवीय नगर में आग जिस इमारत में लगी, जिसके निचले हिस्से में एक रेस्तरां था और ऊपर होटल चल रहा था। आग लगते ही इमारत में धुआं भर गया और कई लोग अंदर फंस गए। दमकल की आठ गाड़ियों ने मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पाया। पुलिस के मुताबिक 40 से ज्यादा लोगों को सुरक्षित बाहर निकालकर नजदीकी अस्पतालों में पहुंचाया गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार कुछ लोग जान बचाने के लिए खिड़कियों पर आ गए थे और मदद के लिए चिल्ला रहे थे। आसपास के लोगों ने भी राहत कार्य में मदद की और कई घायलों को एम्बुलेंस आने से पहले सुरक्षित जगह पर पहुंचाया। भारत में आग लगने की घटनाएं अक्सर होती रहती हैं। कई इमारतों में सुरक्षा के जरूरी इंतजाम पूरे नहीं होते, इसलिए जब आग लगती है तो बड़ा नुकसान होता है और लोगों की जान भी चली जाती है। बीबीसी ने लिखा- मरने वाले विदेशी इलाज के लिए भारत आए थे-दक्षिण दिल्ली इमारत में लगी आग से मरने वालों में कई विदेशी नागरिक भी शामिल हैं, जो इलाज के लिए भारत आए थे। यह इमारत एक गेस्ट हाउस की तरह इस्तेमाल की जा रही थी, जहां पास के प्राइवेट अस्पताल में इलाज करा रहे मरीज और उनके परिवार वाले रुकते थे। दिल्ली सरकार के मंत्री आशीष सूद ने कहा कि जांच की जा रही है कि इमारत को गेस्ट हाउस के तौर पर इस्तेमाल की इजाजत थी या नहीं। अगर किसी तरह की लापरवाही या नियमों के उल्लंघन की पुष्टि होती है, तो जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक आग बहुत तेजी से फैली, जिससे ऊपरी मंजिलों पर मौजूद लोग फंस गए। कई लोगों ने जान बचाने के लिए दूसरी और तीसरी मंजिल से छलांग लगा दी। स्थानीय लोगों ने सड़क पर गद्दे बिछाकर लोगों को कूदने में मदद की और कई लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला। भारत में आग लगने की ऐसी घटनाएं अक्सर सामने आती हैं। जांच रिपोर्ट्स में कई बार खराब बिजली व्यवस्था, सुरक्षा नियमों की अनदेखी और तय इस्तेमाल से अलग तरीके से चल रही इमारतों को ऐसे हादसों की बड़ी वजह बताया गया है। दक्षिण दिल्ली के मालवीय नगर इलाके में स्थित फ्लोरिश स्टे होटल में बुधवार को भीषण आग लग गई।

सीजेपी बोली- सीबीएसई चेयरमैन का ट्रांसफर सिर्फ दिखावा,सरकार से बातचीत को हैं तैयार-6 जून को प्रदर्शन

नयी दिल्ली। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) ने बुधवार को दिल्ली में पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस की। पार्टी की तरफ से तीन प्रवक्ता पहली बार दिपके 6 जून को अमेरिका से दिल्ली पहुंचेंगे। इसके बाद वे जंतर-मंतर पर प्रदर्शन की अनुमति लेने के लिए संसद मार्ग थाने जाएंगे। पार्टी ने देशभर के युवाओं से इस आंदोलन में शामिल होने की अपील की है। पार्टी ने दावा किया कि जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक भी प्रदर्शन में शामिल हो सकते हैं। सीजेपी नेताओं ने कहा कि यह आंदोलन शिक्षा व्यवस्था और राजनीतिक तंत्र को लेकर युवाओं की बढ़ती नाराजगी को दर्शाता है। कॉकरोच जनता पार्टी एक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है, जो भारत के चीफ जस्टिस सूर्यकांत की हालिया कॉकरोच टिप्पणी के बाद सामने आया। सीजेपी के इंस्टाग्राम पर 2 करोड़ से ज्यादा फॉलोअर्स हैं। इसे अभिजीत दीपके ने बनाया है। 30 साल के अभिजीत दिपके महाराष्ट्र के संभाजी नगर के रहने वाले डिजिटल मीडिया स्ट्रैटेजिस्ट हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, उन्होंने पुणे से पत्रकारिता की पढ़ाई की है। फिलहाल वे अमेरिका की हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में पब्लिक रिलेशन से मास्टर्स कर रहे हैं। अभिजीत 2020 से 2022 तक केजरीवाल की आम आदमी पार्टी के सोशल मीडिया स्ट्रैटेजिस्ट रहे हैं। 2020 के दिल्ली विधानसभा चुनावों में वे आप के लिए वायरल मीम बेस्ड ऑनलाइन प्रचार सामग्री बनाते थे। एक इंटरव्यू में अभिजीत ने बताया कि निजी जिंदगी और आर्थिक स्थिरता के लिए उन्होंने आप छोड़कर बोस्टन यूनिवर्सिटी में अप्लाई किया था। एडमिशन मिलने पर वे अमेरिका शिफ्ट हो गए। अभिजीत किसान आंदोलन से लेकर महंगाई जैसे मुद्दों पर एक्स अकाउंट पर केंद्र सरकार और पीएम पर निशाना साधते रहे हैं।

प्रयागराज में ग्रीष्म कालीन अभिनय प्रशिक्षण में फिर प्रतिभाग करने का मौका

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। अभिनय के क्षेत्र में करियर बनाने का सुनहरा अवसर!

क्या आप अभिनय के क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं? आपके लिए विशेष खुशखबरी है! Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur, U.P. से बैचलर इन परफॉर्मिंग आर्ट्स (B.P.A.) कोर्स शुरू किया जा रहा है। कोर्स की मुख्य विशेषताएँ:-वैध डिग्री: विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त पूर्ण स्नातक डिग्री। विस्तृत पाठ्यक्रमः बेहतर समझ और व्यावहारिक ज्ञान के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया सिलेबस। कम फीसः बहुत ही मामूली और किफायती शुल्क। अभिनय की इस पाठशाला में आपका बच्चा यहाँ से पहला कदम बढ़ा सकता हैं, इसके अलावा बहुत से क्रिएटिव एक्टिविटीज़ भी होती हैं जो बच्चों को एक नए नज़रिये से किसी चीज़ को देखने के लिए प्रेरित करती हैं। यह कला के क्षेत्र में कदम रखने वाले युवाओं के लिए एक अनोखा अवसर है। कृपया इस संदेश को अपने दोस्तों, परिवार और प्रियजनों के साथ ज़रूर साझा करें। अधिक जानकारी और विवरण के लिए साथ में दिया गया पोस्टर देखें।

मां-बाप, बहन की हत्या बेटे ने की थी, करोड़ों के गहने लूटे फिर बेटे का मर्डर हिस्सा-बाट में दोस्त ने किया

प्रयागराज। प्रयागराज में करोड़पति परिवार के 4 सदस्यों की हत्या का पुलिस ने खुलासा कर दिया। मां-बाप और बहन की हत्या बेटे ने ही अपने दोस्त के साथ मिलकर की थी। हत्या के बाद दोनों ने घर से डेढ़ करोड़ रुपए के गहने लूटे। गहनों के बंटवारे को लेकर फिर आपस में विवाद हो गया। इसके बाद दोस्त ने बेटे की हत्या कर दी। वारदात के बाद उसने दुकान में बाहर से ताला लगाया और गहने लेकर फरार हो गया। पुलिस ने आरोपी दोस्त सनी गुप्ता को हिरासत में ले लिया है। वह चाय की दुकान लगाता है। उसके पास से लूटे हुए गहने भी बरामद हुए हैं। पुलिस जांच में सामने आया है कि कारोबारी बेटे को प्रॉपर्टी से बेदखल करने वाले थे, जिससे वह नाराज था। इसके बाद उसने वारदात को अंजाम दिया। हत्यारोपी सनी गुप्ता ने मीडियाकर्मियों से कहा- 'हमें लगा कि जो अपने मां-बाप का नहीं हुआ, वह मेरा क्या होगा। हमने कोई अपराध नहीं किया था। उसी ने मुझे उकसाया और बुलाया। उसने अपने मां-बाप का कत्ल किया। हम दोनों सोना-चांदी लेकर नीचे आए। उसने कहा था कि मुझे भी हिस्सा देगा, लेकिन नहीं दिया। इसी वजह से मैंने उसकी हत्या कर दी।' मंगलवार को कारोबारी वीरेंद्र कुमार वैश्य (70), उनकी पत्नी अनीता (65) और बेटी मीनाक्षी (45) के शव घर के अंदर मिले थे। घर में बाहर से ताला बंद था, जबकि बेटे अभिषेक का कुछ पता नहीं चल पाया था। ऐसे में शक अभिषेक पर गया। हालांकि, करीब दो घंटे बाद अभिषेक

(40) का शव मकान के नीचे की दुकान में मिला। दुकान का ताला भी बाहर से बंद था। उसी दुकान पर वीरेंद्र वैश्य भी बैठा करते थे। बड़ा बेटा अभिषेक पेस्टीसाइड और फ्लोर क्लीनिंग सॉल्यूशन का व्यापार करता था। अभिषेक और मीनाक्षी की शादी नहीं हुई थी। छोटा बेटा कौशांबी जेल में बंद है। उसकी पत्नी रितु जमानत पर जेल से बाहर है। पुलिस जांच में पता चला है कि बड़े बेटे अभिषेक की भी पिता से नहीं जमती थी। पड़ोसियों और रिश्तेदारों के अनुसार, अभिषेक की संगत को लेकर परिवार में अक्सर विवाद होता रहता था। एक बार अभिषेक ने किसी व्यक्ति से लाखों रुपए उधार लिए थे। समय पर रकम न लौटाने पर कर्ज देने वालों ने उसकी पिटाई की थी और उसे उठा ले गए थे। धमकी दी थी कि पैसे नहीं मिले तो पूरे परिवार को खत्म कर दिया जाएगा। बाद में बहन मीनाक्षी ने पैसे देकर अभिषेक को छुड़ाया था। इस बात को लेकर कारोबारी से उसका झगड़ा हुआ था। उसे प्रॉपर्टी से भी बेदखल करने वाले थे। इससे अभिषेक पिता से नाराज चल रहा था।

माँ सरस्वती के पूजन के साथ प्रारम्भ हुआ गोपीनाथ संगीत कला ट्रस्ट का समर कैंप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज नैनी। गोपीनाथ संगीत कला ट्रस्ट द्वारा आयोजित एवं माँ शारदा संगीत समिति के तत्वावधान में मंगलवार को आयोजित समर कैंप का शुभारम्भ माँ सरस्वती के पूजन, वंदना एवं दीप प्रज्वलन के साथ अत्यंत गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में बच्चों एवं युवाओं के उत्साह और अभिभावकों की सहभागिता ने आयोजन को विशेष स्वरूप प्रदान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा के जिला कार्यकारिणी सदस्य एवं पूर्व मंडल अध्यक्ष (नैनी) श्री लक्ष्मीकांत तिवारी रहे। उन्होंने माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण, पूजन एवं दीप प्रज्वलन कर समर कैंप का विधिवत उद्घाटन किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि संगीत, कला और संस्कृति भारतीय जीवन मूल्यों की आधारशिला हैं। ऐसे प्रशिक्षण शिविर बच्चों में रचनात्मकता, अनुशासन, आत्मविश्वास एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास करते हैं तथा उन्हें सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं। इस अवसर पर माँ शारदा संगीत समिति के अभिभावक श्री अवधेश सिंह ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। वहीं गोपीनाथ संगीत कला ट्रस्ट की अध्यक्षा श्रीमती सीमा त्रिपाठी एवं माँ शारदा संगीत समिति के निदेशक अभिषेक सिंह ने सभी प्रशिक्षकों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत एवं अभिनंदन किया।समर कैंप में बच्चों एवं युवाओं के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए संगीत, तबला, ढोलक, गिटार, नृत्य तथा आर्ट एंड क्राफ्ट की विशेष कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। गायन का प्रशिक्षण डॉ. शिवांगी मिश्रा (असिस्टेंट प्रोफेसर), तबला का प्रशिक्षण राहुल सर, गिटार का प्रशिक्षण ॐ शुक्ला, नृत्य का प्रशिक्षण वनीत सर तथा आर्ट एंड क्राफ्ट का प्रशिक्षण चारु जी द्वारा प्रदान किया जा रहा है। गोपीनाथ संगीत कला ट्रस्ट की अध्यक्षा सीमा त्रिपाठी ने बताया कि समर कैंप का उद्देश्य बच्चों एवं युवाओं को भारतीय संगीत, कला और संस्कृति से जोड़ना तथा उनकी प्रतिभाओं को निखारने के लिए एक सशक्त मंच उपलब्ध कराना है। उन्होंने कहा कि आज के डिजिटल युग में बच्चों को रचनात्मक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से जोड़ना समय की आवश्यकता है, जिससे उनका बौद्धिक, मानसिक एवं नैतिक विकास सुनिश्चित हो सके। माँ शारदा संगीत समिति के निदेशक अभिषेक सिंह ने बताया कि शिविर के माध्यम से विद्यार्थियों को अनुभवी प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में विभिन्न कलाओं का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। साथ ही शिविर के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक एवं रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन भी किया जाएगा, जिससे प्रतिभागियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यक्रम में देवराज सिंह, शांभवी शर्मा, अंकिता सिंह सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ, अभिभावक एवं कला प्रेमी उपस्थित रहे। सभी ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे बच्चों के उज्ज्वल भविष्य एवं सांस्कृतिक संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास बताया।

सेवा/संवेदना और सहयोग आधारित शिक्षा ही हमारा संकल्प- कुलपति आचार्य संजय सिंह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। दिव्यांगजनों के शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण को नई दिशा प्रदान करने के उद्देश्य से डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ के कुलपति आचार्य संजय सिंह की अध्यक्षता में मंगलवार को जनपद के दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग, समाज कल्याण विभाग, प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभागों

तथा विभिन्न शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में एक महत्वपूर्ण विभागीय बैठक का आयोजन विकास भवन स्थित महात्मा गांधी सभागार में किया गया। बैठक में विभिन्न विभागों, संस्थानों एवं सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने सहभागिता करते हुए दिव्यांगजनों के समग्र विकास एवं उच्च शिक्षा में उनकी सहभागिता बढ़ाने पर व्यापक विचार-विमर्श किया।कार्यक्रम का शुभारम्भ सभी प्रतिभागियों के परिचय एवं स्वागत के साथ हुआ। इसके उपरांत विश्वविद्यालय की उपलब्धियों, शैक्षणिक गतिविधियों एवं दिव्यांगजन-अनुकूल सुविधाओं पर आधारित एक लघु डॉक्यूमेंटरी का प्रदर्शन किया गया, जिसने उपस्थित प्रतिनिधियों को विश्वविद्यालय की कार्यशैली एवं दृष्टिकोण से परिचित कराया। बैठक की अध्यक्षता करते हुए कुलपति आचार्य संजय सिंह ने कहा कि डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय देश में समावेशी, गुणवत्तापूर्ण एवं रोजगारोन्मुखी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का मूल उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि प्रत्येक विद्यार्थी को आत्मनिर्भर, सक्षम और समाजोपयोगी नागरिक के रूप में विकसित करना है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि 'सेवा, संवेदना और सहयोग आधारित शिक्षा ही हमारा संकल्प और ध्येय है।'कुलपति ने विश्वविद्यालय में संचालित स्नातक, स्नातकोत्तर, व्यावसायिक एवं शोध कार्यक्रमों, आधुनिक अधोसंरचना, छात्रवृत्ति सुविधाओं, तकनीकी संसाधनों तथा दिव्यांगजन-अनुकूल वातावरण की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने उपस्थित अधिकारियों एवं प्रतिनिधियों से विश्वविद्यालय के प्रवेश अभियान को जन-जन तक पहुँचाने तथा अधिकाधिक दिव्यांग एवं वंचित विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा से जोड़ने में सहयोग प्रदान करने का आह्वान किया। अपने संबोधन में उन्होंने विश्वविद्यालय की एक महत्वपूर्ण भावी योजना की जानकारी देते हुए बताया कि दिव्यांग विद्यार्थियों को उनके गृह क्षेत्र के निकट गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रयागराज एवं वाराणसी में क्षेत्रीय केंद्र (रीजनल सेंटर) स्थापित किए जाने का प्रस्ताव है। इन केंद्रों के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा, परामर्श एवं शैक्षणिक सहयोग की सुविधाएँ स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कराई जा सकेंगी, जिससे दूरदराज़ क्षेत्रों में रहने वाले दिव्यांगजनों को विशेष लाभ प्राप्त होगा। कुलपति ने विश्वविद्यालय की एक उल्लेखनीय उपलब्धि साझा करते हुए बताया कि वर्तमान शैक्षणिक सत्र में विश्वविद्यालय के 13 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों ने बिना राइटर (लेखन सहायक) की सहायता के स्वयं कंप्यूटर के माध्यम से परीक्षा उत्तीर्ण कर एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीकी एवं शैक्षणिक सहयोग प्रणाली की सफलता का प्रमाण है तथा दिव्यांग विद्यार्थियों की क्षमता और आत्मविश्वास को भी दर्शाती है। बैठक के दौरान विभिन्न विभागों एवं संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अपने अनुभव साझा किए तथा दिव्यांगजनों के कल्याण एवं शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करते समय आने वाली चुनौतियों, समस्याओं एवं संभावित समाधानों पर विचार व्यक्त किए। उपस्थित प्रतिभागियों ने समन्वित प्रयासों के माध्यम से दिव्यांगजनों तक सरकारी योजनाओं और शैक्षणिक अवसरों को पहुँचाने की आवश्यकता पर बल दिया। सुभाशीष संस्थान के निदेशक ऐश्वर्य श्रीवास्तव ने दिव्यांगजनों के लिए संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि इन योजनाओं की सफलता के लिए जमीनी स्तर पर व्यापक जन-जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने सुझाव दिया कि विश्वविद्यालय में प्रवेश एवं नामांकन बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया आधारित जागरूकता अभियान, पेड डिजिटल प्रमोशन तथा सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स की सहभागिता प्रभावी सिद्ध हो सकती है। जिला समाज कल्याण विभाग, रायबरेली के प्रतिनिधि मोहन त्रिपाठी ने विश्वविद्यालय द्वारा दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं एवं समावेशी शैक्षणिक वातावरण की सराहना की। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रवेश अभियान में पूर्ण सहयोग एवं समर्थन प्रदान करने का आश्वासन दिया। इसी क्रम में उपस्थित अन्य विभागीय अधिकारियों एवं संस्थागत प्रतिनिधियों ने भी विश्वविद्यालय के साथ समन्वय स्थापित कर दिव्यांगजनों को उच्च शिक्षा से जोड़ने हेतु हर संभव सहयोग देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। बैठक के दौरान विश्वविद्यालय के सह-आचार्य डॉ. विजय शंकर शर्मा ने पावर पॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से विश्वविद्यालय की ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया, विभिन्न पाठ्यक्रमों, पात्रता मानदंडों तथा आवेदन प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियों से आग्रह किया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को विश्वविद्यालय की सुविधाओं और प्रवेश प्रक्रिया के बारे में जागरूक करें। कार्यक्रम में उप निदेशक, दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग, लखनऊ मंडल राजेश कुमार मिश्रा, जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी रायबरेली विकास वर्मा, विश्वविद्यालय के डॉ. श्याम सिंह (सहायक प्रोफेसर), डॉ. रंजीत कुमार (मैनेजर वर्कशॉप), डॉ. आरती शुक्ला, के.एस. मेमोरियल कॉलेज, रायबरेली की प्राचार्य, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, रायबरेली की प्राचार्या सुनीता सिंह, तथा अल्पसंख्यक कल्याण विभाग, जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र, समाज कल्याण विभाग, प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभागों सहित विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। बैठक का समापन दिव्यांगजनों के हित में विभिन्न विभागों, संस्थानों एवं विश्वविद्यालय के मध्य निरंतर समन्वय, सहयोग एवं साझेदारी को और अधिक सुदृढ़ बनाने के संकल्प के साथ हुआ।

दस दिवसीय कथक कार्यशाला का रंगारंग समापन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक विभाग द्वारा आयोजित

व एसजेएस में कथक प्रशिक्षण पर चल रही दस दिवसीय कार्यशाला का मंगलवार को देर शाम सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समापन कर दिया गया। कार्यक्रम में कथक प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके नन्हे बच्चों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम की शुरुवात मां सरस्वती की प्रतिमा

पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन से हुई। एसजेएस पब्लिक स्कूल के चेयरमैन श्री रमेश बहादुर सिंह और प्रधानाचार्य डॉ. बीना तिवारी ने आए ने हुए अतिथियों को अंगवस्त्र और माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया। कार्यक्रम में सभी बच्चों ने समूह नृत्य प्रस्तुत किया। निया गुप्ता ने शिव तांडव पेश किया तो वही बच्चों द्वारा भाव नृत्य का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में नेपाल में अन्तर्राष्ट्रीय नृत्य प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल जीतने वाली हिमानी दीक्षित ने भी अपनी मनमोहक प्रस्तुति दी। इस कार्यशाला का आयोजन एनजीओ कलार्पण द्वारा किया गया था। कार्यशाला में उत्तर प्रदेश सांस्कृतिक विभाग की रिसोर्स पर्सन व कलार्पण संस्था की अवध प्रान्त की नृत्य विधा संयोजिका नीलम गुप्ता के नेतृत्व में 36 बच्चों ने कथक का प्रशिक्षण प्राप्त किया। एसजेएस पब्लिक स्कूल के चेयरमैन श्री रमेश बहादुर सिंह ने कहा कि महज दस दिन में किसी कला को सीखकर मंच से प्रस्तुति देना बहुत ही कठिन होता है लेकिन कार्यशाला के नन्हे बच्चो ने अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया हैं। प्रशिक्षक नीलम गुप्ता बधाई की पात्र है। कलार्पण संस्था के राष्ट्रीय संगठन मंत्री दिगंबर नारायण तिवारी ने अपने संबोधन में कहा कि संस्था का उद्देश्य देश मे छिपी इन्ही प्रतिभाओं को निखारना है।आज बच्चों के प्रदर्शन को देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। कलार्पण संस्था के केंद्रीय महामंत्री डॉ धनञ्जय सिंह ने सभी बच्चों की भूरी-भूरी प्रसंशा की। संस्कार भारती के जिलाध्यक्ष राजेन्द्र अवस्थी ने भी सभी बच्चों का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि 10 दिन में बच्चों ने सीखकर अच्छा प्रदर्शन किया। कलार्पण संस्था के कार्यकारी क्षेत्रीय अध्यक्ष नरेंद्र सक्सेना ने कहा कि बच्चों की मेहनत के साथ-साथ उनके माता पिता भी बधाई के पात्र है। कार्यक्रम में कलार्पण संस्था के राम केदार जी, संस्कार भारती के जिला संरक्षक रामराज गिरी, संस्कार भारती के जिला महामंत्री पंकज मिश्रा, और मातृभूमि सेवा मिशन के संयोजक प्रदीप पांडे भी मौजूद रहे।

पुरुषोत्तम मास के पावन अवसर पर श्री मद भागवत महापुराण कथा का आयोजन चंद्र गहना रोड कपसेठी कर्वी चित्रकूट धाम में हुआ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) चित्रकूट। कथावाचक पं. भागवत प्रसाद शास्त्री जी महाराज ने गोवर्धन पूजा के प्रसंग के दौरान मंगलवार को उन्होंने कहा कि किस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने भगवान इंद्र के घमंड को चूर करने के लिए बृजवासियों को गिरिराज की पूजा करने के लिए प्रेरित किया और इन्द्र के प्रकोप से बचाने के लिए अपनी ऊंगली पर गिरिराज को धारण कर समस्त बृजवासियों को बचाया। संगीतमय कथा वाचन के दौरान पांडाल में उपस्थित सैंकडों की संख्या में श्रद्धालु भाव विभोर हो कर नृत्य करने के साथ् झूमने लगे। उन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण के पैदा होने के बाद कंस उसको मौत के घाट उतारने के लिए अपनी राज्य की सर्वाधिक बलवान राक्षसी पूतना को भेजता है। पूतना वेश बदलकर भगवान श्रीकृष्ण को अपने स्तन से जहरीला दूध पिलाने का प्रयास करती है। लेकिन भगवान श्रीकृष्ण उसको मौत के घाट उतार देते हैं। उसके बाद कार्तिक माह में ब्रजवासी भगवान इंद्र को प्रसन्न करने के लिए पूजन का कार्यक्रम करने की तैयारी करते हैं। भगवान कृष्ण द्वारा उनको भगवान इंद्र की पूजन करने से मना करते हुए गोवर्धन महाराज की पूजन करने की बात कहते हैं। इंद्र भगवान उन बातों को सुनकर क्रोधित हो जाते हैं। वह अपने क्रोध से भारी वर्षा करते हैं। जिसको देखकर समस्त ब्रजवासी परेशान हो जाते हैं। भारी वर्षा को देख भगवान श्री कृष्ण गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा अंगुली पर उठाकर पूरे नगरवासियों को पर्वत को नीचे बुला लेते हैं। जिससे हार कर इंद्र एक सप्ताह के बाद वर्षा को बंद कर देते हैं। जिसके बाद ब्रज में भगवान श्री कृष्ण और गोवर्धन महाराज के जयकारे लगाने लगते हैं। मौके पर भगवान को भोग लगाया गया। जब पृथ्वी पापियों का बोझ सहन नहीं कर पा रही थी, तब सभी देवता ब्रह्माजी व शिव के साथ क्षीर सागर में भगवान की स्तुति करने लगे। तब भगवान श्री हरि ने प्रसन्न होकर देवताओं को बताया कि मैं वासुदेव व देवकी के घर कृष्ण रूप में जन्म लूंगा और वृंदावन में मां यशोदा व नंदबाबा के घर बाल लीलाएं करूंगा। इसलिए आप सब भी उस समय धरती पर किसी ना किसी रूप में उपस्थित रहना।भगवान ने पृथ्वी पर श्रीकृष्णा अवतार धारण किया तब सभी देवता और स्वयं ब्रह्मा व शिव जी भी भगवान की लीलाओं के साक्षी बने थे। उन्होंने बताया कि इस तरह जब भी पृथ्वी पर कहीं भी भगवान का जन्मोमोत्सव मनाया जाता है, तो ये सब देवी-देवता भी वहां अवश्य आते है।जब भगवान ने कृष्ण जन्म लिया था, तब पृथ्वी पर ना जाने कितने जन्मों से जीव भगवान की प्रतीक्षा कर रहे थे। इसी तरह जब भगवान का जन्मोत्सव मनाया जाता है और उस जन्मोत्सव में जो भाग लेते है, वे कोई साधारण जीव नहीं होते वे बहुत पुण्यात्मा होते हैं। इस मौके पर आचार्य वैदिक पंडितः राहुल कृष्ण महराज जी(श्रीधाम वृंदावन) ,कथा आयोजन कर्ता श्री धीरेन्द्र सिंह , श्री शिव शरण सिंह,श्रीमती देवमती,श्री श्रीमती कमला देवी, पत्नी श्री शिव कुमार, श्री बाबूलाल, श्री शिव पूजन सिंह, श्री वीरेंद्र सिंह, श्री सत्येंद्र सिंह, पुष्पेन्द सिंह, अनुग्रह सिंह, विपिन सिंह,शुभांकर सिंह एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे है।

अब गर्भवती महिलाओं की होंगी छह प्रसवपूर्व जांचें,जोखिमों की होगी अधिक प्रभावी निगरानी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मातृ एवं नवजात स्वास्थ्य को और बेहतर बनाने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश सरकार ने बुधवार को गर्भवती महिलाओं की प्रसवपूर्व जांच (एएनसी) व्यवस्था को सुदृढ़ करने का निर्णय लिया है। अब प्रत्येक गर्भवती महिला के लिए न्यूनतम छह प्रसवपूर्व जांचें सुनिश्चित करने पर विशेष ज़ोर दिया जाएगा। इससे पहले नियमित रूप से चार एएनसी जांचों का प्रावधान था। इस संबंध में परिवार कल्याण महानिदेशक डॉ. एच.डी. अग्रवाल ने सभी जिलों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए हैं। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. नवीन चंद्रा ने बताया कि गर्भावस्था के दौरान नियमित स्वास्थ्य निगरानी मां और शिशु दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। छह निर्धारित जांचों के माध्यम से गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति पर अधिक बारीकी से नजर रखी जा सकेगी और संभावित जटिलताओं की समय रहते पहचान संभव होगी। उन्होंने बताया कि अतिरिक्त एएनसी विजिट से एनीमिया, गर्भावधि मधुमेह (जेस्टेशनल डायबिटीज), उच्च रक्तचाप, भ्रूण के विकास में असामान्यताओं तथा अन्य जोखिमपूर्ण स्थितियों का शीघ्र पता लगाया जा सकेगा। समय पर चिकित्सकीय हस्तक्षेप से गंभीर जटिलताओं को रोका जा सकेगा और मातृ एवं नवजात मृत्यु दर में कमी लाने में मदद मिलेगी। मुख्य चिकित्सा अधिकारी का कहना है कि प्रसवपूर्व जांचों की संख्या बढ़ने से गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य जोखिमों की पहचान और प्रबंधन अधिक प्रभावी होगा तथा सुरक्षित मातृत्व की दिशा में सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे। जिला स्वास्थ्य शिक्षा एवं सूचना अधिकारी डी.एस.अस्थाना ने बताया कि नई व्यवस्था से आशा, एएनएम और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को गर्भवती महिलाओं के साथ अधिक नियमित संपर्क बनाए रखने का अवसर मिलेगा। प्रत्येक मुलाकात के दौरान महिलाओं को संतुलित आहार, आयरन-फोलिक एसिड की गोलियों वेक सेवन, आवश्यक जांचों, टीकाकरण, संस्थागत प्रसव की तैयारी तथा नवजात शिशु की देखभाल के संबंध में परामर्श दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि परिवार के सदस्यों को भी गर्भावस्था के दौरान दिखाई देने वाले खतरे के लक्षणों तथा प्रसव के बाद नवजात में संभावित स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति जागरूक किया जाएगा, ताकि आवश्यकता पड़ने पर समय पर स्वास्थ्य संस्थान से संपर्क किया जा सके। प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान (पीएमएसएमए) के तहत प्रत्येक माह की 1, 9, 16 और 24 तारीख को गर्भवती महिलाओं की जांच की जाती है। इन जांचों के माध्यम से उच्च जोखिम गर्भावस्था (एचआरपी) की पहचान कर आवश्यक प्रबंधन सुनिश्चित किया जाता है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में जनपद में पीएमएसएमए के अंतर्गत 37799 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिनमें 4920 महिलाओं को उच्च जोखिम गर्भावस्था श्रेणी में चिन्हित किया गया। इन महिलाओं की विशेष निगरानी और उपचार की व्यवस्था की गई। नई एएनससी की है यह व्यवस्था- पहली एएनसी : गर्भावस्था का पंजीकरण होते ही, 12 सप्ताह के भीतर। दूसरी एएनसी : 16 से 20 सप्ताह के बीच। तीसरी एएनसी : 24 से 28 सप्ताह के बीच। चौथी एएनसी : 28 से 32 सप्ताह के बीच। पाँचवीं एएनसी : 32 से 36 सप्ताह के बीच। छठी एएनसी : 36 से 40 सप्ताह के बीच।

हड़ताल पर रोक लोकतंत्र पर हमला, हड़ताल प्रतिबंध वापस ले सरकार गंगेश्वर दत्त शर्मा : 'सीटू' नेता

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 6 महीने के लिए हड़तालों पर लगाए गए प्रतिबंध को सीटू गौतम बुध नगर ने लोकतंत्र और श्रमिक अधिकारों पर सीधा हमला करार दिया है। जिला सचिव गंगेश्वर दत्त शर्मा ने कहा कि यह कदम सरकार की तानाशाही मानसिकता को दर्शाता है।प्रमुख बिंदु:- संवैधानिक अधिकार पर चोटः हड़ताल करना श्रमिकों-कर्मचारियों का बुनियादी लोकतांत्रिक और संवैधानिक अधिकार है। जब सरकार संवाद बंद कर दे और मांगें अनसुनी करे, तब हड़ताल ही आखिरी रास्ता बचता है। इस पर रोक लगाना असहमति की आवाज दबाना है। स्थायी नौकरियों की जगह संविदाः सरकार 'संविदा कर्मी नहीं हटेंगे' कहकर असली मुद्दे से ध्यान भटका रही है। हकीकत यह है कि स्थायी पद खत्म कर आउटसोर्सिंग और संविदा को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे निजी कंपनियों को फायदा और

कर्मचारियों को सामाजिक सुरक्षा से वंचित किया जा रहा है। रिक्त पद और बढ़ता बोझः प्रदेश के विभागों में लाखों पद खाली हैं। इससे कार्यरत कर्मचारियों पर बोझ बढ़ रहा है और जनता को समय पर सेवाएं नहीं मिल रही। समाधान प्रतिबंध नहीं, भर्ती है। श्रम कानूनों का उल्लंघनः न्यूनतम मजदूरी, समान काम-समान वेतन और सामाजिक सुरक्षा जैसे कानूनी अधिकारों से श्रमिकों को वंचित रखा जा रहा है।सरकार की जिम्मेदारी अधिकार देना है, न कि आवाज कुचलना। सीटू की मांगें:-1. हड़ताल पर लगाया गया प्रतिबंध तुरंत वापस लिया जाए 2. सभी रिक्त पदों पर तत्काल स्थायी भर्ती की जाए 3. आउटसोर्सिंग/संविदा प्रथा खत्म कर वर्षों से कार्यरत कर्मियों को नियमित किया जाए 4. श्रमिक संगठनों के साथ सार्थक संवाद कर लंबित मांगें हल की जाएं। गंगेश्वर दत्त शर्मा ने कहा कि लोकतांत्रिक अधिकारों को कुचलने की यह कोशिश बेहद खतरनाक है। सीटू गौतम बुध नगर के सभी श्रमिकों, कर्मचारियों, किसानों, युवाओं और नागरिकों से अपील करता है कि लोकतंत्र और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए एकजुट होकर आवाज बुलंद करें।

ग्रेटर नोएडा में वर्ल्ड एनवायरनमेंट एक्सपो 2026 का शुभारंभ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। ग्रेटर नोएडा पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छ ऊर्जा और हरित तकनीकों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित वर्ल्ड एनवायरनमेंट एक्सपो 2026 का आज इंडिया एक्सपो सेंटर, ग्रेटर नोएडा में एनवायरनमेंट एक्सपो पर्यावरण, स्वच्छ ऊर्जा और हरित तकनीकों से जुड़े उद्योगों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बन गया है। हमें खुशी है कि इस वर्ष बड़ी संख्या में प्रदर्शक, उद्योग विशेषज्ञ और आगंतुक इस आयोजन में भाग ले

रहे हैं। यह पर्यावरण संरक्षण के प्रति बढ़ती जागरूकता और लोगों की सकारात्मक सोच को दर्शाता है।' प्रदर्शनी में नवीकरणीय ऊर्जा, प्रदूषण नियंत्रण, कचरा प्रबंधन, जल संरक्षण, रीसाइक्लिंग, बायोफ्यूल, बायोडिग्रेडेबल एवं कम्पोस्टेबल उत्पाद, ऊर्जा दक्षता और बैटरी रीसाइक्लिंग से जुड़ी नवीनतम तकनीकों और उत्पादों का प्रदर्शन किया जा रहा है। यह आयोजन बायोफ्यूल एक्सपो 2026, रूफटॉप सोलर एक्सपो 2026, बायोडिग्रेडेबल एंड कम्पोस्टेबल एक्सपो 2026, वर्ल्ड ऑफ रीसाइक्लिंग एक्सपो 2026 और बैटरी एशिया एक्सपो 2026 के साथ आयोजित किया जा रहा है। इससे पर्यावरण, स्वच्छ ऊर्जा और रीसाइक्लिंग से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को एक ही मंच पर मिलने और नए व्यापारिक अवसरों को तलाशने का अवसर मिल रहा है। इस आयोजन का संयुक्त रूप से इंडियन एग्जीबिशन सर्विसेज (आईईएस) और ग्रीन सोसाइटी ऑफ इंडिया (जीएसआई) द्वारा आयोजन किया जा रहा है। आयोजकों ने उद्योग जगत, शोधकर्ताओं, छात्रों, पर्यावरण प्रेमियों और आम नागरिकों से प्रदर्शनी में भाग लेकर पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छ ऊर्जा से जुड़ी नई तकनीकों एवं समाधानों को जानने का आग्रह किया है।

42वीं वाहिनी पीएसी, नैनी में '25वीं अंतर वाहिनी कंप्यूटर, एंटी सैवोटॉज चेक, विधि विज्ञान, पुलिस फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी एवं डॉग स्क्वायड प्रतियोगिता' का उद्घाटन

1.मुख्य अतिथि आईपीएस राजेश कुमार श्रीवास्तव ने दीप प्रज्वलित कर किया शुभारंभ। 2.प्रतियोगिता में पीएसी पूर्वी जोन की कुल 10 टीम ने किया प्रतिभाग। 3.पहले दिन कंप्यूटर वर्ग की लिखित एवं मौखिक परीक्षाएं सफलतापूर्वक संपन्न।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। 42वीं वाहिनी पीएसी, नैनी, प्रयागराज के सभागार में श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव (आईपीएस) रहे। वाहिनी परिसर पहुंचने पर सह आयोजन सचिव व उपसेनानायक श्री उदय प्रताप सिंह ने मुख्य अतिथि महोदय को टीपॉट भेंट कर उनका स्वागत किया। इसके पश्चात मुख्य अतिथि ने सभी टीम प्रबंधकों से परिचय प्राप्त किया। मुख्य अतिथि श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा फीता काटकर, दीप प्रज्वलित कर एवं माल्यार्पण कर प्रतियोगिता का

आज से तीन दिवसीय '25वीं अंतर वाहिनी कंप्यूटर, एंटी सैवोटॉज चेक, विधि विज्ञान, पुलिस फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी एवं डॉग स्क्वायड प्रतियोगिता' का आधिकारिक शुभारंभ हुआ। यह तकनीकी पुलिस प्रतियोगिता आगामी 05 जून 2026 तक संचालित होगी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि 42वीं वाहिनी के सेनानायक विधिवत उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर खेल भावना को बनाए रखने और परीक्षाओं को शुचितापूर्ण, ईमानदारी व निष्ठापूर्वक संपन्न कराने के लिए सभी प्रतिभागियों को शपथ दिलाई गई। उद्घाटन की घोषणा के साथ ही आज पहले दिन कंप्यूटर विषय की लिखित एवं मौखिक परीक्षाएं आयोजित की गईं। इस त्रैदिवसीय प्रतियोगिता में कुल 10 वाहिनियों की टीमें भाग ले रही हैं, जिनमें 42वीं वाहिनी, 04वीं वाहिनी, 12वीं वाहिनी, 20वीं वाहिनी, 33वीं वाहिनी, 34वीं वाहिनी, 36वीं वाहिनी, 37वीं वाहिनी, 39वीं वाहिनी एवं 48वीं वाहिनी शामिल हैं।इस अवसर पर सहायक सेनानायक श्री वेद प्रकाश राय, वाहिनी चिकित्सक डॉ. ओम प्रकाश, शिविरपाल श्री अरविंद कुमार सिंह, सहायक शिविरपाल श्री हरदास और सूबेदार मेजर श्री राधेश्याम यादव सहित अन्य पुलिस अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के सफल संचालन हेतु सैम हिगिंनस इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर, टेक्नोलॉजी एंड साइंसेज (SHUATS) के प्रोफेसर एवं स्टाफ चयन समिति व निर्णायक मंडल के रूप में विशेष तौर पर उपस्थित रहे।

सलोन विधायक अशोक कुमार ने तीन दिवसीय प्रदर्शनी का किया अवलोकन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। विधायक सलोन अशोक कुमार ने विकास खण्ड राही परिसर में सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा केंद्र सरकार एवं प्रदेश सरकार की उपलब्धियों, जनकल्याणकारी योजनाओं तथा स्थापित किए गए नए कीर्तिमानों पर आधारित तीन दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस अवसर पर मा0 विधायक ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए योजनाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त की तथा उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाया जाए। मा0 विधायक ने कहा कि केंद्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाएं समाज के प्रत्येक वर्ग के उत्थान हेतु समर्पित हैं।

उन्होंने आमजन से अपील की कि वे इन योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर उनका अधिकतम लाभ उठाएं। प्रदर्शनी में विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया, जिससे आमजन को सरकार की नीतियों एवं कार्यों की विस्तृत जानकारी प्राप्त हो रही है।

इस अवसर पर अति0 जिला सूचना अधिकारी कौशलेन्द्र सिंह सहित सूचना विभाग वेक कर्मचारीगण व मीडिया संस्थान के प्रतिनिधिगण उपस्थित रहें।

जिला पंचायत अध्यक्ष रंजना चौधरी ने विकास खण्ड राही में आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मा0 अध्यक्ष जिला पंचायत रंजना चौधरी ने आज सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा विकास खण्ड राही में केंद्र एवं प्रदेश सरकार की उपलब्धियों, जनकल्याणकारी योजनाओं एवं विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित नए कीर्तिमानों पर आधारित तीन दिवसीय प्रदर्शनी का अवलोकन किया।कार्यक्रम के दौरान मा0 जिला पंचायत अध्यक्ष रंजना चौधरी ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर विभिन्न विभागों की योजनाओं का अवलोकन किया। उन्होंने योजनाओं के संबंध में जानकारी ली तथा निर्देश दिए कि योजनाओं का लाभ पात्र लाभार्थियों तक प्रभावी ढंग से पहुंचाया जाए। जिला पंचायत अध्यक्ष ने कहा कि सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएं समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाने के उद्देश्य से संचालित की जा रही हैं। उन्होंने आम नागरिकों से आह्वान किया कि वे इन योजनाओं के प्रति जागरूक होकर उनका अधिकाधिक लाभ उठाएं। इस अवसर पर उन्होंने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान सरकार "सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास और सबका प्रयास" के मूल मंत्र पर काम कर रही है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि इन प्रदर्शनियों के माध्यम से समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक सरकारी योजनाओं की सटीक जानकारी पहुँच रही है। इस अवसर अति0 जिला सूचना अधिकारी कौशलेन्द्र सिंह सहित सूचना विभाग के कर्मचारीगण व मीडिया संस्थान वेक प्रतिनिधिगण उपस्थित रहें।

समाजवादी पार्टी ने की प्रेस कॉन्फ्रेंस

नोएडा विधानसभा-61 की मतदाता सूची में भारी अनियमितताओं का आरोप,11,596 संदिग्ध मतदाता प्रविष्टियों की पहचान होने का दावा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। समाजवादी पार्टी नोएडा महानगर संगठन द्वारा सेक्टर-33 स्थित महाराजा अग्रसेन भवन में महानगर अध्यक्ष डॉ. आश्रय गुप्ता की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। प्रेस वार्ता का संचालन पार्टी के मीडिया प्रभारी गौरव कुमार यादव ने किया।प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए डॉ. आश्रय गुप्ता ने आरोप लगाया कि नोएडा विधानसभा क्षेत्र-61 की मतदाता सूची में व्यापक एवं गंभीर अनियमितताएं सामने आई हैं। पार्टी द्वारा किए गए स्थानीय स्तर के सत्यापन एवं जांच के दौरान अब तक 11,596 संदिग्ध मतदाता प्रविष्टियों की पहचान की गई है। इनमें अनेक ऐसे मामले सामने आए हैं, जहां एक ही व्यक्ति के नाम पर एक से अधिक मतदाता पहचान पत्र जारी पाए गए हैं। उन्होंने बताया कि प्रारंभिक जांच में ऐसे कई उदाहरण मिले हैं, जहां एक ही व्यक्ति के नाम पर तीन, चार, पांच और यहां तक कि छह-छह वोटर आईडी दर्ज हैं। कई मामलों में मतदाता का नाम, आयु, पिता का नाम एवं अन्य विवरण समान पाए गए, जबकि उनका पंजीकरण अलग-अलग बूथों पर दर्ज है। कुछ मामलों में एक ही बूथ संख्या पर भी एकाधिक प्रविष्टियां मिली हैं। डॉ. गुप्ता ने कहा कि यह स्थिति निर्वाचन आयोग द्वारा विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण (एसीं) एवं तकनीकी रूप से सुदृढ़ एवं पारदर्शी मतदाता सूची तैयार करने के दावों पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़ा करती है। उन्होंने कहा, 'हमें शुरुआत से ही इस प्रक्रिया पर संदेह था, लेकिन अब उपलब्ध दस्तावेजी साक्ष्यों ने उन आशंकाओं को और मजबूत कर दिया है। समाजवादी पार्टी निर्वाचन आयोग से इस पूरे मामले में लिखित स्पष्टीकरण मांगेगी तथा विस्तृत शिकायत स्पीड पोस्ट के माध्यम से भेजेगी।' निर्वाचन आयोग से पूछे गए प्रमुख प्रश्नः- यदि मतदाता सूची पुनरीक्षण प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी और तकनीकी रूप से सुदृढ़ थी, तो इतनी बड़ी संख्या में डुप्लीकेट प्रविष्टियां कैसे बनी रहीं? यदि यह प्रशासनिक त्रुटि है, तो इसके लिए जिम्मेदार निर्वाचन अधिकारियों के विरुद्ध क्या कार्रवाई की गई है अथवा की जाएगी? एक ही व्यक्ति के नाम पर अनेक वोटर आईडी तथा विभिन्न बूथों पर पंजीकरण कैसे संभव हुआ? क्या निर्वाचन आयोग पूरी मतदाता सूची का स्वतंत्र एवं निष्पक्ष पुनः परीक्षण कराएगा? यदि हां, तो दोषपूर्ण प्रविष्टियों को हटाने की समय-सीमा क्या होगी? इस प्रकरण में संबंधित जिलाधिकारियों एवं अन्य जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही कैसे तय की जाएगी? पूर्व विधानसभा प्रत्याशी सुनील चौधरी ने कहा कि पार्टी की जांच प्रक्रिया अभी जारी है और भविष्य में भी प्रेस वार्ताओं के माध्यम से जनता एवं मीडिया के समक्ष और अधिक तथ्यों को रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में फर्जी मतदाता, हटाए गए मतदाताओं तथा अन्य अनियमितताओं से संबंधित मामलों का भी खुलासा किया जाएगा।

महासचिव विकास यादव एवं मीडिया प्रभारी गौरव कुमार यादव ने कहा कि यह मामला किसी राजनीतिक दल की प्रतिष्ठा का नहीं, बल्कि लोकतंत्र की बुनियाद और मतदाता सूची की शुद्धता एवं विश्वसनीयता का विषय है। उन्होंने निर्वाचन आयोग से मांग की कि पूरे मामले की उच्चस्तरीय, स्वतंत्र एवं पारदर्शी जांच कराकर दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाए तथा जांच रिपोर्ट सार्वजनिक की जाए। समाजवादी पार्टी नोएडा महानगर संगठन ने घोषणा की कि सभी उपलब्ध दस्तावेजों एवं साक्ष्यों के साथ निर्वाचन आयोग को विस्तृत शिकायत भेजी जाएगी तथा आयोग के उत्तर की प्रतीक्षा की जाएगी। पार्टी ने यह भी आश्वासन दिया कि जांच की प्रगति एवं आगे की कार्रवाई की जानकारी समय-समय पर जनता और मीडिया को उपलब्ध कराई जाएगी।प्रेस वार्ता में प्रमुख रूप से उपस्थित- डॉ. आश्रय गुप्ता , सुनील चौधरी, विकास यादव (महासचिव), बबलू चौहान, गौरव कुमार यादव, मनोज गोयल, बाबूलाल बंसल, संजय त्यागी, भीष्म यादव, रामवीर यादव, राघवेंद्र दुबे, रोहित यादव, नकुल चौहान, राणा मुखर्जी, उदय सिंह, रंजन कुमार, वीरपाल अवाना, लोकेश यादव, गौरव यादव ,वेदपाल, हरपाल सिंह, शादाब खान, नीर अवाना, दानिश सहित अनेक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

स्वच्छता व्यवस्था को लेकर फोनरवा प्रतिनिधिमंडल ने विशेष कार्याधिकारी क्रांति शेखर से की मुलाकात

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। शहर में पिछले कई दिनों से चल रही कूड़ा वाहन चालकों की हड़ताल के कारण उत्पन्न स्वच्छता संकट तथा शहर भर में लगे कूड़े के ढेरों से नागरिकों को हो रही भारी परेशानियों के संबंध में आज फोनरवा वेक एक प्रतिनिधिमंडल ने विशेष कार्याधिकारी क्रांति शेखर से मुलाकात कर विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। बैठक के दौरान फोनरवा अध्यक्ष योगेन्द्र शर्मा ने कहा कि बार-बार होने वाली हड़तालों के कारण शहर की स्वच्छता व्यवस्था गंभीर रूप से प्रभावित हो रही है, जिससे नागरिकों के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। फोनरवा अध्यक्ष ने क्रान्ति शेखर जी से कहा कि ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिए स्थायी एवं वैकल्पिक व्यवस्था विकसित की जाए, ताकि भविष्य में शहरवासियों को इस प्रकार की समस्याओं का सामना न करना पड़े। उन्होंने यह भी बताया कि पूर्व में विभिन्न सेक्टरों की आरडब्ल्यूए अपने स्तर पर घर-घर से कूड़ा संग्रहण का कार्य करवाती थीं। उस व्यवस्था में कूड़ा समय पर उठता था तथा संबंधित एजेंसियों पर आरडब्ल्यूए का प्रभावी नियंत्रण भी रहता था। परिणामस्वरूप हड़ताल जैसी परिस्थितियों का सामना कभी नहीं करना पड़ता था। प्रतिनिधिमंडल ने यह भी चिंता व्यक्त की कि जब से नोएडा प्राधिकरण के स्वास्थ्य विभाग को समाप्त कर उसे सिविल विभाग में समाहित किया गया है, तब से शहर की सफाई व्यवस्था में गिरावट देखने को मिल रही है। विभिन्न वर्क सर्किलों में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी कार्यों के दायित्वों को लेकर स्पष्टता का अभाव दिखाई देता है, जिसके कारण सफाई कार्य अपेक्षित स्तर पर नहीं हो पा रहे हैं।प्रतिनिधिमंडल ने विशेष रूप से आगामी मानसून को ध्यान में रखते हुए बड़े नालों एवं जल निकासी तंत्र की सफाई का मुद्दा भी उठाया। प्रतिनिधिमंडल ने बताया कि मानसून शुरू होने में अब बहुत कम समय शेष है, जबकि अनेक स्थानों पर बड़े नालों की सफाई अभी तक नहीं हुई है। यदि समय रहते आवश्यक कार्यवाही नहीं की गई तो वर्षा के दौरान सेक्टरों में जलभराव की गंभीर समस्या उत्पन्न हो सकती है। बैठक में शहर की स्वच्छता, कूड़ा निस्तारण, जल निकासी एवं अन्य जनहित से जुड़े विषयों पर भी सार्थक चर्चा हुई। विशेष कार्याधिकारी श्री क्रांति शेखर ने प्रतिनिधिमंडल द्वारा उठाए गए सभी मुद्दों को गंभीरता से लेते हुए शीघ्र आवश्यक कार्यवाही एवं समाधान का आश्वासन दिया। इस अवसर पर प्रतिनिधिमंडल में अशोक मिश्रा, एडवोकेट लाट साहब लोहिया, प्रदीप वोहरा, जी.एस. सचदेवा, कोसिंदर यादव, विनोद शर्मा, देवेन्द्र यादव, अनीता सिंह एवं सुभाष भाटी सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

सूर्य चौहान हत्याकांडः दोषियों को फांसी दो, कट्टरता फैलाने वाले तंत्र की भी हो जांच - शालिनी सिंह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। गाजियाबाद खोड़ा क्षेत्र में युवा सूर्य चौहान की नृशंस एवं जघन्य हत्या ने पूरे समाज को आक्रोश से भर दिया है। इस हृदयविदारक घटना के बाद नोएडा सिटीजन फोरम की कार्यकारी अध्यक्षा शालिनी सिंह ने शोकाकुल परिवार से मुलाकात कर उन्हें सांत्वना दी तथा न्याय की लड़ाई में हर संभव साथ देने का आश्वासन दिया। परिवार से मुलाकात के बाद शालिनी सिंह ने उत्तर प्रदेश सरकार एवं माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी से मांग करते हुए कहा कि इस जघन्य हत्याकांड में शामिल सभी दोषियों, उनके सहयोगियों तथा उन्हें संरक्षण देने वाले लोगों के विरुद्ध कठोरतम कार्रवाई की जाए और उन्हें ऐसी सजा दी जाए जो भविष्य में किसी भी अपराधी के लिए चेतावनी बने। उन्होंने यह भी मांग की कि मदरसों में कट्टरपंथ, उग्रवाद अथवा राष्ट्रविरोधी सोच को बढ़ावा दिया जा रहा है, वहां की निष्पक्ष और व्यापक जांच होनी चाहिए। वहां पढ़ाए जा रहे पाठ्यक्रमों की गहन जांच कराई जाए तथा यदि कहीं जिहादी, कट्टरपंथी या समाज को विभाजित करने

वाली विचारधारा को बढ़ावा दिए जाने के प्रमाण मिलते हैं तो ऐसे मदरसों पर तत्काल कठोर कार्रवाई की जाए। परिवार की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए सूर्य के भाई को इंदिरापुरम पब्लिक स्कूल में रोजगार उपलब्ध कराने का आश्वासन भी दिया गया है। इस दौरान युवा क्रांति सेना के अध्यक्ष अविनाश सिंह, आशीष यादव, आकाश शर्मा, बॉबी मावी, बॉबी शर्मा, आदि मौजूद थे।

डेमोग्राफी की अच्छी समझ के बिना हम समस्याएं नहीं सुलझा सकते

भारत जनसंख्या वृद्धि की चुनौती का ही सामना नहीं कर रहा, तेजी से बदलते जनसांख्यिकीय संतुलन की जटिल परिस्थितियों से भी गुजर रहा है। देश के सामने केवल यह प्रश्न नहीं

है कि आबादी कितनी बढ़ रही है, बल्कि यह भी है कि आबादी की संरचना, वितरण, आयु-प्रोफाइल, प्रवासन-प्रवृत्तियां और संसाधनों पर उसका प्रभाव किस दिशा में जा रहा है। यही कारण है कि जस्टिस नावलेकर की अध्यक्षता में गठित उच्चस्तरीय समिति को दूरदर्शी व समयानुकूल पहल माना जा रहा है। निःसंदेह समिति में प्रशासन, न्याय और नीति-निर्माण के क्षेत्र से जुड़े अनुभवी एवं विद्वान सदस्य सम्मिलित हैं। किंतु यदि इसमें प्रत्यक्ष रूप से डेमोग्राफी (जनसांख्यिकी) के विशेषज्ञों को भी शामिल किया जाता, तो यह पहल और व्यापक तथा अकादमिक रूप से समृद्ध बन सकती है। जनसंख्या संतुलन जैसे विषय केवल प्रशासनिक या राजनीतिक विमर्श तक सीमित नहीं होते, बल्कि वे प्रजनन-संक्रमण, जनसंख्या-परिवर्तन, आयु-संरचना, प्रवासन-पैटर्न, निर्भरता-अनुपात, शहरीकरण प्रवृत्तियों तथा जनसंख्या-पूर्वानुमान जैसे जटिल जनसांख्यिकीय आयामों से जुड़े होते हैं। इन परिवर्तनों को समझने के लिए गणितीय-मॉडलिंग, दीर्घकालिक डेटा-विश्लेषण और सांख्यिकीय प्रक्षेपण की विशेषज्ञता आवश्यक होती है। यदि रोजगार-सृजन, शहरी-नियोजन और संसाधनों के प्रबंधन में संतुलन नहीं बना, तो हमारा डेमोग्राफिक डिविडेंड बोझ में भी परिवर्तित हो सकता है। इसी संदर्भ में अवैध प्रवासन का प्रश्न महत्वपूर्ण है। यह केवल आंतरिक या सीमा सुरक्षा का विषय नहीं है, बल्कि विकास, प्रशासन और संसाधन-प्रबंधन से भी सीधे जुड़ा हुआ मुद्दा है। सरकारें अपनी योजनाएं जनगणना, सर्वेक्षणों और पंजीकृत आबादी के आधार पर बनाती हैं।शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, खाद्य-सुरक्षा, पेयजल, रोजगार और सामाजिक-कल्याण से जुड़ी योजनाओं का पूरा ढांचा इसी अनुमानित जनसंख्या पर आधारित होता है। किंतु जब किसी क्षेत्र में बड़ी संख्या में अवैध आबादी जुड़ जाती है, तो वास्तविक मांग और सरकारी योजना में अंतर पैदा हो जाता है। संसाधनों का अनियोजित बंटवारा होने से अनेक योजनाएं अपने मूल उद्देश्यों को पूरी तरह प्राप्त नहीं कर पातीं। जब समिति का मूल विषय ही देश में जनसंख्या बदलाव से जुड़ी चुनौतियों का अध्ययन करके स्थायी समाधान और नीतिगत उपायों का सुझाव देना है तो उसमें जनसांख्यिकी विशेषज्ञों की प्रत्यक्ष भागीदारी क्यों नहीं है? भारत में इस क्षेत्र की विशेषज्ञता का अभाव नहीं है। कोलकाता स्थित भारतीय सांख्यिकी संस्थान विश्वस्तरीय रिसर्च और जनसंख्या विश्लेषण के लिए जाना जाता है। इसी प्रकार मुंबई के देवनार स्थित अंतरराष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान जनसंख्या-अध्ययन, प्रजनन-स्वास्थ्य, प्रवासन, जनसांख्यिकीय-अनुसंधान और राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण जैसे महत्वपूर्ण अध्ययनों का प्रमुख संस्थान है। इन संस्थानों में ऐसे अनेक विशेषज्ञ मौजूद हैं, जो जनसंख्या-परिवर्तन के दीर्घकालिक प्रभावों के वैज्ञानिक आकलन में संबंधी आयोगों और नीति समितियों में सांख्यिकीविदों, जनसांख्यिकी विशेषज्ञों, महामारी वैज्ञानिकों और प्रवासन विशेषज्ञों को शामिल किया जाता है। क्योंकि वे भी वैध-अवैध माइग्रेशन से जुड़ी हुई समस्याओं से जूझ रहे हैं। भारत की जनसांख्यिकीय विविधता भी व्यापक है। विभिन्न राज्यों में प्रजनन-दर, जनसंख्या-घनत्व, आयु-वितरण और प्रवासन-पैटर्न में अंतर दिखता है। ऐसे में एक समान दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं हो सकता। क्षेत्रीय वास्तविकताओं को समझने के लिए डेटा-आधारित और वैज्ञानिक विश्लेषण की आवश्यकता होती है। समिति का गठन करना गृह मंत्रालय की महत्वपूर्ण पहल है, किंतु जनसंख्या का प्रश्न केवल वर्तमान का नहीं, भविष्य का भी है और भविष्य की योजना तथ्यों, विज्ञान और दूरदृष्टि के आधार पर ही बनाई जा सकती है। (ये लेखिका के अपने विचार हैं,डॉ. अर्चना मुठ्ये)

ट्विशा मामले में हमारे सामने अनुत्तरित प्रश्नों का पहाड़ है

ट्विशा शर्मा एक पूर्व मॉडल थीं, जो अपनी सास और पूर्व जिला जज गिरिबाला सिंह के घर में संदिग्ध परिस्थितियों में मृत पाई गई थीं। ट्विशा के पति समर्थ सिंह- जो पेशे से वकील हैं और ट्विशा की मृत्यु के तुरंत बाद फरार हो गए थे- और गिरिबाला अब सीबीआई की हिरासत में हैं। किंतु यह मानने के लिए लगातार अधिक प्रमाण सामने आ रहे हैं कि यह दहेज की मांगों से त्रस्त होकर

आत्महत्या करने वाली किसी महिला की कहानी नहीं है। ठोस तथ्य लगातार संकेत कर रहे हैं कि ट्विशा की मृत्यु सम्भवतः एक हिंसक हमले का परिणाम थी। अपराध-स्थल के सीसीटीवी फुटेज हासिल करने को लेकर गिरिबाला सिंह की असामान्य बेचैनी इस बात का संकेत देती है कि शायद उनके पास छिपाने के लिए कुछ था। उनके आवास पर कैमरे लगाने वाले सीसीटीवी तकनीशियन ने पुष्टि की है कि वे घटनास्थल की फुटेज सुरक्षित करने को लेकर उत्सुक थीं। बहू की मृत्यु के कुछ ही घंटों बाद उनके मन में ऐसा विचार क्यों आया? यह तो पुलिस की दिलचस्पी का विषय होना चाहिए। बात केवल घर के भीतर लगे कैमरों तक सीमित नहीं थी। गिरिबाला के विरुद्ध सबसे गम्भीर संकेत उस ब्यूटी पार्लर से मिलता है, जहां ट्विशा को उनकी मृत्यु वाले दिन आखिरी बार देखा गया था। इस वीडियो में ट्विशा स्पष्ट रूप से सहज दिखाई देती हैं। पार्लर प्रबंधक ने हमें दिए एक साक्षात्कार में कहा भी कि उनमें चिंता या तनाव का कोई स्पष्ट संकेत दिखाई नहीं दिया। पार्लर प्रबंधक ने यह भी पुष्टि की कि अगले दिन गिरिबाला ने उन्हें फोन कर यह जानने के लिए कई प्रश्न पूछे कि ट्विशा ने अपने बिलों का भुगतान किस प्रकार किया था। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि गिरिबाला जानना चाहती थीं कि क्या पार्लर में सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं, और वे उस फुटेज को प्राप्त करना चाहती थीं। इसके तुरंत बाद वकीलों का एक समूह पार्लर पहुंचा और उसके संचालक से फुटेज उन्हें सौंपने की मांग करने लगा। यह न केवल गैर-कानूनी था, बल्कि यह गिरिबाला की हताशा को भी प्रकट करता है। क्या वे पार्लर के सीसीटीवी फुटेज को इसलिए अपने कब्जे में लेना चाहती थीं क्योंकि उसमें दिखाई देने वाली शांत और सहज ट्विशा की छवियां आत्महत्या संबंधी उनके दावों का खंडन करती थीं? टाइमलाइन भी आत्महत्या के कथानक से मेल नहीं खाती। ट्विशा के परिवार ने मेरे साथ कॉल रिकॉर्ड साझा किए हैं,

Barkha dutt

जिनसे पता चलता है कि उनकी मृत्यु वाले दिन रात 10 बजकर 5 मिनट पर अपने माता-पिता के साथ उनकी फोन पर अंतिम बातचीत हुई थी। समर्थ का दावा है कि ट्विशा ने रात 10.20 बजे फांसी लगाई। यदि ससुराल पक्ष के दावे को सही मानें कि उन्होंने एक एक्सरसाइज रिंग से लटककर आत्महत्या की, तो यह कोई ऐसा तत्काल किया जाने वाला कृत्य नहीं है, जिसे मात्र 15 मिनट की अवधि में अंजाम दिया जा सके। सीबीआई अब 80 किलो वजन वाले एक स्ट्रक्चर का उपयोग करके यह जांच कर रही है कि वह रिंग इतना भार सहन भी कर सकती थी या नहीं। पुलिस से इस मामले में हुई प्रारंभिक चूकें भी स्तब्ध कर देने वाली हैं। वे केवल लापरवाही ही नहीं, बल्कि प्रभावशाली सम्पर्कों के दखल का भी संकेत देती हैं। यह तथ्य कि ट्विशा के परिवार द्वारा प्राथमिकी दर्ज कराए जाने से पहले ही गिरिबाला को अग्रिम जमानत मिल गई, बहुत कुछ कहता है। पहली पोस्टमार्टम प्रक्रिया के दौरान पुलिस ने वह ?रिंग भी उपलब्ध नहीं कराई, जिसका कथित रूप से ट्विशा ने फांसी लगाने के लिए उपयोग किया था। वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने मुझसे कहा है कि इसे मात्र भूल नहीं माना जा सकता। ट्विशा के परिवार के वकील ने भी प्रश्न उठाया हैं- क्या निष्पक्ष जांच के बिना निष्पक्ष मुकदमा सम्भव है? ट्विशा की मृत्यु से पहले उनके परिवार द्वारा की गई एक निजी ऑडियो रिकॉर्डिंग में गिरिबाला कथित रूप से अपनी बहू के लिए अपमानजनक और अश्लील भाषा का प्रयोग करती हुई सुनाई देती हैं। माना जा रहा है कि पहली पोस्टमार्टम रिपोर्ट प्रभावित की गई थी और सम्भवतः उसमें हेरफेर भी किया गया था। ट्विशा की ननद डॉ. राशि अबरोल ने मुझे दिए अपने दर्ज बयान में खुलासा किया है कि पहले पोस्टमार्टम के दौरान गिरिबाला की बहन- जो स्वयं एक चिकित्सक हैं- उस कक्ष में उपस्थित थीं, जहां शव-परीक्षण किया जा रहा था। यह नियमों और प्रक्रियाओं का स्पष्ट उल्लंघन था। ट्विशा के शरीर पर पाई गई सात चोटों का भी अब तक कोई संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है। गिरिबाला और उनके पुत्र ने यह दावा करने का प्रयास किया कि ये चोटें छत से सीढ़ियों के रास्ते शव को नीचे लाने के दौरान लगी थीं, लेकिन अब यह स्थापित हो चुका है कि ये सभी चोटें मृत्यु से पहले लगी थीं। यह तथ्य इस अंदेशे को जन्म देता है कि ट्विशा की मृत्यु से पहले उन पर हमला किया गया था, और सम्भव है कि वही हमला उनकी मृत्यु का कारण भी बना हो। गिरिबाला के प्रभावशाली स्थानीय सम्पर्कों ने इस आशंका को बल दिया है कि मामले में बड़े पैमाने पर लीपापोती की गई हो सकती है। वास्तव में इस मामले में इतने विरोधाभास मौजूद हैं और तथ्यों को छिपाने के इतने स्पष्ट प्रयास ?दिखाई देते हैं कि अनुत्तरित प्रश्नों का एक पहाड़ हमारे सामने खड़ा हो जाता है। इन तमाम सवालों की तह तक पहुंचना अब न्याय के लिए बहुत जरूरी हो गया है। (ये लेखिका के अपने विचार हैं.बरखा दत्त)

मेडिकल इमरजेंसी का अंदाजा लगाना मुश्किल, लेकिन तैयार रहना आसान

इस सोमवार रात करीब 9 बजे जालंधर के उद्योगपति दीपक पुजारा अपने बैडमिंटन खेल के बीच में थे। बीते पांच वर्षों से वे उस शहर के कई लोगों की तरह फिट रहने के लिए रायजादा हंसराज बैडमिंटन

स्टेडियम में कुछ घंटे खेल और मनोरंजन में बिताते थे। एक शॉट खेलते समय उन्हें कार्डियक अरेस्ट आया और वे गिर पड़े। दूसरे कोर्ट पर खेल रहे उसी शहर के कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. नीतीश गर्ग

उन्हें गिरता देखकर मदद के लिए दौड़े। उन्होंने कार्डियक मसाज दी, लेकिन दीपक ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। हालांकि अस्पताल स्टेडियम से सिर्फ दो मिनट के ड्राइविंग डिस्टेंस पर था, लेकिन डॉ. गर्ग को लगा कि दीपक इतनी-सी दूरी तक भी नहीं जा सकेंगे। उन्होंने स्टेडियम की फर्स्ट-एड किट से एक इमरजेंसी गोली देने के बाद सीपीआर जारी रखा। साथ ही वे स्टाफ की मदद से मेडिकल उपकरण और एम्बुलेंस की व्यवस्था में भी लगे रहे, ताकि जल्द अस्पताल पहुंचा जा सके। जब स्टाफ दिल को बिजली का झटका देने वाला जीवनरक्षक उपकरण 'डिफिब्रिलेटर' लाया तो उन्होंने झटका दिया और दिल धड़कने लगा। फिर दीपक को अस्पताल ले जाया गया, जहां जांच में 90झ और 99झ के दो बड़े ब्लॉकेज मिले, जिनमें स्टेंट डाले गए। सुना है कि कि दीपक अब ट्रीटमेंट के प्रति रेस्पॉन्ड कर रहे हैं और स्वस्थ हो रहे हैं। इससे मुझे 2018 में दीपावली के ठीक दूसरे दिन की एक घटना याद आ गई। उज्जैन के नानाखेड़ा स्थित महानंदानगर स्पोर्ट्स एरिना में कुछ डॉक्टर रिलैक्स होने के लिए बैडमिंटन खेल रहे थे। खेल के बाद फोटोशूट के दौरान उनमें से एक डॉक्टर कुछ ही सेकंड में गिर पड़े। फोटो लेने वाले ने देखा कि पहली फोटो में डॉक्टर मुस्करा रहे थे, दूसरी में उनके मुंह की स्थिति बदल गई, तीसरी में वे आगे झुक गए और चौथी फोटो में जमीन पर गिर गए। वहां मौजूद ऑस्ट्रेलिया के जाने-माने कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. निलेश मेहता ने स्थिति संभाली और उज्जैन के सीएचएल अस्पताल के तत्कालीन प्रमुख डॉ. निलेश शर्मा को भी मदद के लिए बुलाया गया। चूंकि वहां खेल रहे बहुत-से लोग डॉक्टर थे और जिन्हें हार्ट अटैक आया वे भी डॉक्टर थे, इसलिए तत्काल कार्रवाई से उनकी जान बच गई। फिर 2023 में जब मैं जलगांव स्थित जैन इरिगेशन गया तो वहां मैंने देखा कि उनका चिकित्सा विभाग सभी कर्मचारियों को एक छोटा प्लास्टिक कंटेनर बांट रहा था और उनसे आग्रह किया जा रहा था कि वे जहां भी जाएं, इसे साथ रखें। अपने एक सीनियर अधिकारी की नियमित ब्रिस्क वॉक के दौरान हार्ट अटैक से मृत्यु के बाद उन्होंने यह निर्णय किया। कार्डियक अरेस्ट में हर सेकंड मायने रखता है। कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन (सीपीआर) देने की प्रक्रिया जानने पर आप मदद पहुंचने तक पीड़ित के महत्वपूर्ण अंगों तक रक्त प्रवाह बनाए रख सकते हैं। यह जांच लेना भी बेहतर है कि क्या आपके स्पोर्ट्स क्लब, जिम या वर्कप्लेस पर ऑटोमेटेड एक्सटर्नल डिफिब्रिलेटर (एईडी) है या नहीं। उसकी जगह पहले से पता हो तो कई कीमती मिनट बच सकते हैं। यदि आपको दिल की कोई बीमारी नहीं भी है, तब भी हर समय अपने साथ इमरजेंसी दवाएं रखने के बारे में डॉक्टर से सलाह लें। जाहिर है कि आप मौके पर किसी डॉक्टर को वो दवाएं देकर उनकी अतिरिक्त मदद कर सकते हैं। इन सभी घटनाओं से बड़ा सबक यह मिलता है कि अचानक होने वाली कार्डियक समस्या किसी के साथ, कहीं भी हो सकती है। ऐसे में जीवन का बचना पूरी तरह तत्काल कार्रवाई पर निर्भर करता है। आप मेडिकल इमरजेंसी का अंदाजा तो नहीं लगा सकते, लेकिन उसके लिए तैयार रह सकते हैं। फंडा यह है कि एक अच्छा डॉक्टर दोस्त हमेशा बेहतर होता है, क्योंकि वह किसी भी स्वास्थ्य समस्या पर निष्पक्ष राय देता है। लेकिन वही डॉक्टर आपका स्पोर्ट्स पार्टनर भी हो तो यह दोनों हाथों में लड्डू होने जैसा है। एन. रघुरामन

हे सरकार! खन्दक से निकली हो या पाताल से?

भले कुछ दिन ही रहा, लेकिन युद्ध विराम देखकर लग रहा था, कोई समाधान निकलने वाला है। तेल और गैस संकट से लगातार जूझ रही दुनिया को कुछ राहत

मिल सकेगी। लेकिन बम फिर फूटने लगे हैं। मिसाइलों के मुंह फिर खुल गए हैं। न अमेरिका मान रहा है, न ईरान। दरअसल, सरकारें किसी भी देश की हों, इनका स्वभाव लगभग एक जैसा ही होता है। ये किसी खोह-खन्दक से उभरी हैं, या गहरे पाताल से निकली हैं? इनकी दृष्टि निरी अजीब। देवमय भी। दैत्यमय भी। इनकी गंध, जैसे सांझ की आंधी। इनके आदेशों के गहने, केवल भयानक। और इनका साथ, जैसे कोई कब्र में उतरता जाए ...! जी! सरकार शब्द की परिभाषा अब कुछ ऐसी ही है। कभी वह एयरपोर्ट पर कतार लगाकर बाबा रामदेव के आगे नतमस्तक होती है और कभी वही सरकार उसी बाबा को आधी रात को डंडे मारकर भगाती है। कभी वह अन्ना हजारे को गांधी जी की तरह सम्मान देती है और कभी उन्हीं अन्ना हजारे को समानांतर सरकार चलाने की मंशा रखने वाला बिजूका बताती है। कभी वह किसी भ्रष्टाचारी नेता पर बेतहाशा छापे मारती है, लेकिन वही नेता जब सरकारी पाले में आ जाता है तो उसके तमाम पाप धुल जाते हैं। देश की सीमा छोड़ें तो दिखता है- सुबह ट्रम्प सरकार ईरान को अभयदान देने का डंका बजाती है और वही सरकार शाम को ईरान पर बम फोड़ देती है। ये दोनों शांत होते हैं तो इजराइल सरकार, लेबनान को नेस्तनाबूद करने पर तुल जाती है। तब मर्यादा और संयम उस सागर में तैरते-डूबते दिखाई देते हैं, जिसमें निराशा के खारे लेकिन बलशाली पानी के सिवाय और कुछ भी नहीं है। अनगिनत देशों के तेल से लदे सैकड़ों जहाज होर्मुज के आसपास समंदर में डूब मरने को मजबूर हैं। आत्महत्या के सिवाय उनके पास कोई चारा नहीं है। किसी को दुनिया की नहीं पड़ी। किसी को मानवता की फिक्र नहीं है। सब के सब महंगा तेल बेचने के लिए उतावले हैं। ऊपर से मौसम के बदलाव ने हमारे भारत तक में उत्पादन की रफ्तार को धीमा करने की ठान ली है।सुना है, इस बार दस से पंद्रह प्रतिशत कम बारिश होने वाली है। इसका सीधा असर खेती-किसानी और अनाज उत्पादन पर पड़ने वाला है। हालांकि लम्बी भीषण तपिश के बाद देश के कई इलाकों में आंधी-बारिश ने गर्मी से कुछ हद तक राहत तो दी है लेकिन इस बारिश से खेती को ज्यादा कोई फायदा नहीं है। ऊपर से इस बेमतलब की बारिश के कारण जरूरत पड़ने पर आगे होने वाली बारिश का कोटा कम होने की आशंका जरूर है। होर्मुज के कारण वक्त पर किसानों को डीजल और खाद नहीं मिल पाने की आशंका बलवती हो रही है, सो अलग! फिलहाल तो मौसम छुई-मुई-सा हो रहा है। पल में तोला, पल में माशा। हालांकि मौसम पर किसी देश की सरकार का कोई बस नहीं चलता, वरना ये मंत्री, नेता अपने-अपने हिस्से का छेद बादलों में भी कर आते। फिर जनता या आम आदमी का तो जो होता सो होता, इनके खेत-खलिहानों, बाग-बगीचों में बारिश होती रहती। लम्बे समय से अपना घर भरने, अपना हित देखने के सिवाय इनके पास कोई काम ही कहां है? खैर, इतने तेल संकट के बावजूद इस दिशा में मितव्ययिता कहीं नजर नहीं आ रही है। नेता और मंत्रीगण, प्रधानमंत्री की अपील के कुछ दिन बाद तक जो दिखावा कर सकते थे, उन्होंने श्रद्धापूर्वक किया, इसके बाद वे भी अपने पुराने ढर्रे पर लौट आए हैं। फिलहाल अमेरिका-ईरान-इजराइल युद्ध थमने का नाम नहीं ले रहा है। दूर-दूर तक किसी के झुकने या नरम पड़ने के संकेत नहीं हैं। अगर खारे समंदर में तीन-चार महीने इसी तरह बमबारी होती रही, इसी तरह मिसाइलें दागी जाती रहीं तो ये पूरा साल, बल्कि अगले साल तक भी स्थिति सुधरने वाली नहीं है। क्योंकि आज ही युद्ध रुक जाए तो भी स्थिति सामान्य होने में कोई छह-सात महीने तो लगेंगे ही। अंदाजा लगाया जा सकता है कि आगे क्या होगा और किस तरह समय गुजरने वाला है! अपना घर भरने के सिवा? मौसम पर किसी सरकार का बस नहीं चलता, वरना ये मंत्री, नेता अपने-अपने हिस्से का छेद बादलों में भी कर आते। फिर जनता का तो जो होता सो होता, इनके खेत-खलिहानों, बाग-बगीचों में बारिश होती रहती। अपना घर भरने के सिवाय इनके पास कोई काम ही कहां है? (नवनीत गुर्जर)

दिल्ली आग हादसे में 11 विदेशी सहित 21 की मौत, होटल मालिक गिरफ्तार- कुछ अनसुनी कहानियां

पिता को देखने आए थे, परिवार के 8 लोग मृत

नयी दिल्ली। दक्षिण दिल्ली के मालवीय नगर स्थित फ्लोरिश स्टे होटल में बुधवार सुबह लगी आग ने 21 लोगों की जान ले ली। इस होटल को 6 कमरों की मंजूरी थी, लेकिन 5 मंजिलों पर 25 से ज्यादा कमरे बना लिए। होटल के पास परिवार इसी होटल में ठहरा था। हादसे में विवेक, पत्नी तर्जनी, मां प्रेमलता, बेटी जीविषा व वार्या, झावेरी, मामा अशोक गोयल और मौसी कमला की मौत हो गई। अजमेर निवासी कारोबारी अशोक पंसारी, उनकी बुआ और फूफा की

फायर एनओसी नहीं थी और आने-जाने का एक ही रास्ता था। मृतकों में 11 विदेशी और 10 भारतीय हैं। विदेशियों में 9 अफ्रीकी देशों और 2 तुर्कमेनिस्तान के नागरिक हैं। शवों की पहचान के लिए डीएनए टेस्ट होगा। पुलिस ने होटल मालिक लवकेश बजाज को गिरफ्तार कर लिया है। लवकेश और अन्य पर गैर इरादतन हत्या का केस दर्ज कर लिया है। आग लगने की वजह का अब तक पता नहीं चला है। हादसे में जान गंवाने वाले गुरुग्राम के चार्टर्ड अकाउंटेंट विवेक अग्रवाल ने आग के बीच एक रिश्तेदार को फोन पर कहा था- भाई, शायद हम बच नहीं पाएंगे। आग फैली तो लोगों को निकलने का मौका नहीं मिला- प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया, आग सुबह 8:30 बजे लगी। कुछ मिनट में धुआं पूरी इमारत में फैल गया। ऊपरी मंजिलों पर ठहरे लोगों को निकलने का मौका नहीं मिला। फायर सर्विस, पुलिस और स्थानीय लोगों ने 58 लोगों को बाहर निकाला।इनमें 35 घायल हैं। इस दौरान 10 पुलिसकर्मी भी घायल हुए। मैक्स अस्पताल ने बताया, 39 लोगों को लाया गया था, जिसमें 18 की अस्पताल आने से पहले मौत हो चुकी थी। 15 आईसीयू में भर्ती हैं और इनमें 8 वेंटिलेटर पर हैं। हादसा होने की 5 बड़ी वजह-खिड़कियां बंद थीं। वेंटिलेशन नहीं था। आने-जाने का सिर्फ एक रास्ता था। जगह काफी सकरी थी। बाहरी फायर एस्केप (आपातकालीन निकास) की कोई व्यवस्था नहीं थी। ऐसी इमारतें 'चिमनी' जैसी बन जाती हैं, धुआं-गर्मी कुछ ही सेकंड में ऊपर पहुंच जाती है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया, सेंसर आधारित मुख्य गेट बंद हो गया था। इसकी वजह से लोग बाहर ही नहीं निकल पाए। मालिकों ने अवैध रूप से इमारत में बदलाव किए। अनुमति सिर्फ 6 कमरों की थी, लेकिन 25 कमरे बना दिए गए। स्मोक डिटेक्टर, फायर अलार्म और स्प्रिंकलर सिस्टम जैसे जरूरी फायर सेफ्टी उपकरण काम नहीं कर रहे थे। ग्राउंड फ्लोर पर कई भारी एलपीजी सिलेंडर रखे गए थे, जिनके लिए कोई फायर-आइसोलेशन सुरक्षा व्यवस्था नहीं थी। लोगों को बेसमेंट से ग्रिल तोड़कर निकाला गया-अधिकारियों के अनुसार, इमारत के ग्राउंड फ्लोर पर रेस्टोरेंट था, जबकि बेसमेंट और ऊपरी मंजिलों का इस्तेमाल होटल के रूप में किया जा रहा था। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, आग लगने के बाद कई लोग बेसमेंट में फंस गए। एक स्थानीय व्यक्ति ने दावा किया कि बेसमेंट का दरवाजा बंद था और उसे खोलने में दमकलकर्मियों को 20 मिनट से ज्यादा समय लग गया। दमकलकर्मियों ने ग्रिल काटकर लोगों को बाहर निकाला गया और उन्हें एंबुलेंस के जरिए अस्पताल पहुंचाया। एक रास्ता, बंद खिड़कियां और सेंसर वाला दरवाजा बना मौत का जाल-अधिकारियों के अनुसार, पांच मंजिला होटल में अंदर आने और बाहर निकलने का केवल एक ही रास्ता था। खिड़कियां सील कर दी गई थीं और मेन गेट सेंसर से चलता था। इन सभी कारणों ने मिलकर इमारत को लोगों के लिए मौत का जाल बना दिया। आग इतनी तेजी से फैली कि कई लोगों को संभलने का मौका तक नहीं मिला। कुछ मेहमान उस समय सो रहे थे। साकेत के अस्पताल में अपनों की तलाश में जुटे रोते-बिलखते रिश्तेदारों ने बताया कि शव इस कदर झुलस चुके हैं कि तस्वीरों से भी उनकी पहचान करना नामुमकिन हो रहा है। पिता को देखने आए थे, परिवार के 8 लोग मृत-गुरुग्राम के सेक्टर-46 निवासी सीए विवेक अग्रवाल मैक्स अस्पताल में भर्ती पिता का हालचाल लेने आए थे।

भी अग्निकांड में मौत हो गई। ये मैक्स में भर्ती रिश्तेदार का हालचाल लेने आए थे और इसी होटल में थे। चश्मदीद बोले- सोकर उठा, खिड़कियों से लटके दिखे लोग-होटल के सामने रहने वाली अंजुम ने बताया कि सुबह 8 बजे दमकल को फोन किया था, पर गाड़ियां देर से पहुंचीं। पार्क में टहल रहे अश्विन की नजर धुएं के गुबार पर पड़ी, तो वे घटनास्थल की ओर भागे। अश्विन ने बताया, 'लोगों की मदद से वहां से गुजर रही एम्बुलेंस को रुकवाया। पीड़ितों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया। अनीता चौधरी ने बताया, 'कई धमाकों की गूंज से पूरे इलाके में दहशत फैल गई। चारों तरफ अफरा-तफरी थी। हालात देखकर कॉलोनी के निवासी अंदर फंसे लोगों की मदद के लिए होटल की इमारत की ओर दौड़ पड़े।' हौजरानी गांव के वसीम राजा ने बताया, 'अधिकांश धुएं से बेहोश हो गए थे। हमने बिना हिचकिचाहट उन्हें सीपीआर देना शुरू किया। इसी सूझबूझ से कुछ की मौके पर ही जान बचाई जा सकी, हालांकि कुछ को नहीं बचा पाए।' होटल के पास रहने वाले आसिफ ने बताया- सोकर उठा, तो होटल से धुआं निकल रहा था। फंसे लोग खिड़कियों और बालकनियों से लटककर मदद की गुहार लगा रहे थे। नए गद्दे लाकर सड़क बिछाए, कई की जान बचाई-फायर ब्रिगेड पहुंचने से पहले स्थानीय लोग बचाव में जुट गए। होटल के सामने कंबल-गद्दे की दुकान चलाने वाले अरमान ने दुकान से सभी नए गद्दे और रजाइयां निकालकर सड़क पर बिछा दीं। अरमान ने कहा, होटल की ऊपरी मंजिल से कई लोग इन्हीं गद्दों पर गिरे, जिससे उनकी जान बचाने में मदद मिली। स्थानीय युवक अफजल, शाहरुख, अनीस, आमिर और वसीम ने लोगों को निकालने में मदद की। कम से कम 10 लोगों को सीपीआर भी दी। होटल मालिक ने कहा- मैं नहीं दूसरे लोग संभालते थे काम-गिरफ्तार होटल मालिक लवकेश बजाज ने बताया कि वह खुद होटल की निगरानी नहीं करता था। उसने होटल के मैनेजमेंट, बिलिंग और अकाउंट्स का काम किसी और व्यक्ति को दिया था। उसने यह भी कहा कि होटल में कमरे बड़े करने और अन्य बदलावों की सलाह भी किसी अन्य व्यक्ति ने दी थी। बजाज ने दावा किया कि सलाह देने वाले व्यक्ति ने उससे कहा था- होटल में ये सारे मॉडिफिकेशन नॉर्मल हैं और दिल्ली में सब चलता है। हाई कोर्ट ने जनवरी में मांगा था एक्शन प्लान, अब हादसा-दिल्ली हाई कोर्ट में दायर एक जनहित याचिका में दावा किया गया है कि राजधानी में करीब 1000 लाइसेंसी होटल और गेस्ट हाउस हैं, लेकिन केवल 52 के पास वैध फायर एनओसी है। इस साल 7 जनवरी को कोर्ट ने दिल्ली सरकार, एमसीडी और एनडीएमसी को फायर सेफ्टी पर कार्ययोजना बनाने का निर्देश दिया था। याचिकाकर्ता अधिवक्ता अर्पित भार्गव का कहना था कि बड़ी संख्या में होटल और गेस्ट हाउस जरूरी अग्नि सुरक्षा मानकों के बिना संचालित हो रहे हैं। सुनवाई के करीब 5 महीने बाद अब हादसा हो गया है। अधिकारियों ने बताया, जिस होटल में आग लगी उसका नक्शा नहीं था। दिल्ली में जनवरी 2021 से आग से 445 मौत-देश की राजधानी दिल्ली में जनवरी 2021 से मई 2026 हादसों में 6,466 लोगों की मौत हुई है, जबकि 14,857 लोग घायल हुए हैं। इनमें आगजनी में 445 लोगों की मौत और 3193 लोग घायल हुए। अन्य घटनाओं में 6021 लोगों की मौत और 11,718 लोग घायल हुए हैं।

सबसे अमीर सीएम डीके शिवकुमार की कहानी, जमीन बेचकर लड़ा चुनाव

ईडी ने पकड़ा तो रो पड़े, जेल में मिलने पहुंचीं सोनिया गांधी

बेंगलुरु। बात अक्टूबर 1999 की है। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 224 में 132 सीटें जीतीं। एसएम कृष्णा मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने वाले थे।कृष्णा के कांग्रेस के एस बंगारप्पा सीएम बने और 29 साल के डीके मंत्री। वे तब सबसे कम उम्र के मंत्री थे। डीके को झटका तब लगा, जब 1994 के चुनाव में उन्हें कांग्रेस से

करीबी थे 37 साल के डीके शिवकुमार। इतने करीबी कि नए मंत्रिमंडल की लिस्ट भी दोनों ने साथ मिलकर तैयार की। लेकिन एक रात पहले कांग्रेस हाईकमान से मिली फाइनल लिस्ट में डीके का ही नाम नहीं था। डीके निराश और बेचैन हो गए। उन्होंने रात में ही अपने ज्योतिषी राजगुरु बेल्लूर शंकरनारायण द्वारकानाथ से सलाह मांगी। ज्योतिषी ने कहा- 'जब तक तुम खुद दरवाजा नहीं खोलोगे और मंत्री पद की मांग नहीं करोगे, यह नहीं मिलेगा।'डीके को बात लग गई। लेकिन संभावित मंत्रियों की लिस्ट राज्यपाल को भेजी जा चुकी थी। डीके आधी रात ही एसएम कृष्णा के घर जा पहुंचे। पता चला कि कृष्णा सो रहे हैं, लेकिन डीके ने उन्हें जगाकर कहा- 'आप मेरे बिना मुख्यमंत्री पद की शपथ नहीं ले सकते।' अगले दिन, यानी 11 अक्टूबर 1999 को जब एसएम कृष्णा ने शपथ ली, तब डीके भी मंत्रिमंडल का हिस्सा थे। बाद में डीके ने खुद ये किस्सा सुनाते हुए कहा- 'ज्योतिषी द्वारकानाथ ने मुझसे कहा था कि सत्ता छीननी पड़ती है और मैंने उनकी सलाह मानी।' 27 साल बाद आज 'डोड्डालाहल्ली केम्पेगौड़ा शिवकुमार' उर्फ डीके शिवकुमार ने सिद्धारमैया को हटाकर कर्नाटक के 18वें मुख्यमंत्री की शपथ ली है। साउथ बेंगलुरु जिले में अर्कावती नदी के किनारे बसा है कनकपुरा शहर। यहीं के वोक्कालिगा किसान परिवार में 15 मई 1962 को डीके पैदा हुए। कोई राजनीतिक बैकग्राउंड नहीं था, लेकिन राजनीति में शुरुआत से ही दिलचस्पी थी। 18 साल की उम्र में डीके कांग्रेस की स्टूडेंट विंग एनएसयूआई से जुड़ गए। जल्द ही एनएसयूआई के बेंगलुरु जिला अध्यक्ष बन गए। बेंगलुरु के राम नारायण चेल्लाराम कॉलेज में पढ़ने पहुंचे, तो इंडियन यूथ कांग्रेस जॉइन कर ली। साल 1979 डीके की जिंदगी में टर्निंग पॉइंट बना। कर्नाटक के पहले मुख्यमंत्री देवराज उर्स की इंदिरा गांधी से अनबन हो गई थी। देवराज ने पार्टी तोड़ी। एनएसयूआई और यूथ कांग्रेस में भी फूट पड़ी। कांग्रेस लीडरशिप ने कैडर बचाने का जिम्मा डीके को सौंपा। उन्हें यूथ कांग्रेस का स्टेट जनरल सेक्रेटरी बना दिया गया। डीके ने इतनी जिम्मेदारी से काम किया कि कांग्रेस में उनकी पैठ बनती गई। फिर साल आया 1985। कर्नाटक में विधानसभा चुनाव होने वाले थे। कांग्रेस राज्य में अपनी खोई जमीन वापस चाहती थी। वहीं, जेपी आंदोलन और इमरजेंसी से निकली जनता पार्टी दूसरी बार सत्ता में आना चाहती थी। जनता पार्टी में नंबर-2 की हैसियत रखने वाले एचडी देवगौड़ा ने दो सीटों से पर्चा भरा- हासन जिले की होलेनरसीपुर और बेंगलुरु की साथनूर। देवगौड़ा राज्य के रसूखदार वोक्कालिगा समुदाय से आते थे। उन्हें 'मण्णिन मगा' यानी धरती पुत्र कहा जाता था।

कांग्रेस ने देवगौड़ा के खिलाफ साथनूर सीट से वोक्कालिगा समुदाय के ही 23 साल के डीके शिवकुमार को टिकट दिया। डीके ने चुनाव लड़ने के लिए बेंगलुरु के पास की पुश्तैनी जमीन बेच दी। कड़ा मुकाबला हुआ। 4 बार के विधायक और दो बार नेता प्रतिपक्ष रहे देवगौड़ा सिर्फ 15 हजार वोटों से जीत पाए। डीके हारकर भी टॉप लीडरशिप के करीबी बन गए। देवगौड़ा से हार के बावजूद डीके 4 साल तक साथनूर सीट पर डटे रहे। जिसका फायदा 1989 में मिला। डीके ने जनता पार्टी के यूके स्वामी को 13 हजार वोटों से हराया। इस साल कांग्रेस ने 224 में से 178 सीटें जीतकर सरकार बनाई। फिर अक्टूबर 1990 में

टिकट ही नहीं मिला। वजह थी- पार्टी में गुटबाजी और जातीय समीकरण। हालांकि डीके निर्दलीय चुनाव जीते। कांग्रेस के बी रमेश तीसरे नंबर पर रहे। कांग्रेस आलाकमान समझ गया कि डीके को साथ रखने में ही पार्टी का फायदा है। 1995 के आखिर में डीके की कांग्रेस में वापसी हो गई। 1999 में उन्हें फिर मंत्री बनाया गया। डीके ने साथनूर से लगातार 4 विधानसभा चुनाव जीते। 2008 के परिसीमन में साथनूर सीट कनकपुरा में शामिल हो गई। इसके बाद डीके ने कनकपुरा से चुनाव लड़ा और लगातार 4 बार जीते। सभी 8 चुनावों में डीके को हमेशा 45फीसदी से ज्यादा वोट मिले हैं। 1985 के चुनाव से ही डीके और देवगौड़ा परिवार की राजनीतिक अदावत रही है। 1999 के चुनाव में साथनूर सीट पर डीके के सामने देवगौड़ा के बेटे एचडी कुमारस्वामी खड़े हुए। डीके ने 14 हजार वोटों से हराया। हालांकि 2002 में कनकपुरा लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में वो देवगौड़ा से हार गए। 2004 के लोकसभा चुनाव हुए। कनकपुरा से देवगौड़ा ने पर्चा भरा। डीके ने सियासी गणित लगाया और 37 साल की पत्रकार तेजस्विनी गौड़ा को टिकट दिलवा दिया। तेजस्विनी का नाम नॉमिनेशन की आखिरी तारीख को ही तय हुआ था। तेजस्विनी ने देवगौड़ा को 1.16 लाख वोटों से हरा दिया। ये चौंकाने वाली बात इसलिए थी, क्योंकि तेजस्विनी का यह पहला चुनाव था। जबकि देवगौड़ा 6 दशकों से राजनीति कर रहे थे और प्रधानमंत्री रह चुके थे। इस जीत से डीके की साख इतनी मजबूत हुई कि समर्थक उन्हें 'कनकपुरदा बंडे' यानी कनकपुरा की चट्टान बुलाने लगे। राजनीति में शिवकुमार का कद और बिजनेस तेजी से बढ़ा। किताब 'डीके शिवकुमारः कांग्रेस क्राइसिस मैनेजर, कर्नाटक किंगमेकर' लिखने वाले सीनियर जर्नलिस्ट रशीद किदवई बताते हैं, 'जब भी कांग्रेस आलाकमान को फंड या क्राइसिस मैनेजमेंट की जरूरत पड़ी, उन्हें डीके की याद आई। डीके कई बार कांग्रेस के संकटमोचक साबित हुए।' किस्सा-1ः महाराष्ट्र सरकार बचाने के लिए 40 विधायक बेंगलुरू ले गए-जून 2002 की बात है। महाराष्ट्र में कांग्रेस की अगुवाई वाले डेमोक्रेटिक फ्रंट की सरकार थी। कांग्रेस के विलासराव देशमुख 30 महीने से मुख्यमंत्री थे। अचानक 9 विधायकों ने कह दिया कि वे देशमुख सरकार को समर्थन नहीं देंगे। बीजेपी की अगुआई वाला विपक्ष देशमुख के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लेकर आ गया। कांग्रेस को और विधायक टूटने का डर था। कांग्रेस आलाकमान ने संकट में डीके को जिम्मेदारी सौंपी। डीके ने रातोंरात महाराष्ट्र कांग्रेस के 40 विधायकों बेंगलुरू शिफ्ट किया। एक हफ्ते तक उन्हें कड़ी सुरक्षा में अपने ईगलटन रिसॉर्ट में रखा। टूट नहीं हो सकी और फ्लोर टेस्ट में देशमुख की कुर्सी बच गई। किस्सा-2ः गुजरात के राज्यसभा चुनाव के लिए 44 विधायक एयरलिफ्ट किए-2017 में डीके ने गुजरात में भी ऐसा ही किया। राज्यसभा चुनाव हो रहे थे। सोनिया गांधी के करीबी और राजनीतिक सलाहकार अहमद पटेल गुजरात से राज्यसभा चुनाव लड़ रहे थे। कांग्रेस को डर था कि उनके विधायक क्रॉस वोटिंग कर सकते हैं। इससे अहमद पटेल हार जाते। आलाकमान ने फिर डीके को याद किया। रातोंरात डीके ने गुजरात कांग्रेस के 44 विधायकों को अहमदाबाद से एयरलिफ्ट किया। उन्हें बेंगलुरु के ईगलटन रिसॉर्ट में ठहराया।

भारत का रुपया एशिया में सबसे तेज गिर रहा, पाकिस्तानी रुपया मजबूत हुआ, आखिर कहां चूक हो रही- समझे एक्सपर्ट से

नयी दिल्ली। डॉलर के मुकाबले भारत का रुपया एशिया में सबसे तेजी से गिर रहा है। पिछले 5 महीने में 6फीसदी से ज्यादा टूटा। जबकि इसी दौरान पाकिस्तानी रुपया 0.5फीसदी और चीनी युआन तो 3फीसदी मजबूत हो गया। बाकी देशों का हाल देखिए-दुनिया में एक बाजार है- फॉरेक्स मार्केट, यानी रोकड़ मंडी। ये मंडी किसी एक बिल्डिंग में नहीं होती। ये डिजिटली चलती है, जिसमें दुनियाभर के बैंक, इन्वेस्टमेंट फर्म, एक्सपोर्ट-इंपोर्ट कंपनियां करेंसी खरीदती-बेचती भी विदेशों में डॉलर में ही निवेश करता है। एफडीआई के जरिए भारत में आए डॉलर और बाहर गए डॉलर का अंतर, यानी नेट एफडीआई 2022-23 में 28 अरब डॉलर था, जो 2024-25 में घटकर महज 1 अरब डॉलर रह गया है। मतलब भारत में डॉलर आना कम हो गया। इन्हीं वजहों से भारतीय शेयर बाजार ग्लोबल रैंकिंग में चौथे से सीधे सातवें नंबर पर आ गया। नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड के आंकड़ों के मुताबिक विदेशी निवेशकों ने पिछले 10 साल में जितना पैसा सिर्फ 2 अरब डॉलर। यही फर्क शेयर बाजार में भी दिखता है। अमेरिका, चीन और दूसरे देशों के बाजार चढ़ रहे हैं, जबकि भारत का बाजार झटके खा रहा है। इसकी वजह है- 'रिसर्च एंड डेवलपमेंट पर कम खर्च'। भारत आर एंड डी पर अपनी जीडीपी का सिर्फ 0.65फीसदी खर्च करता है। जबकि चीन और अमेरिका करीब 3फीसदी खर्च करते हैं। सीधे शब्दों में कहे तो चीन की इकोनॉमी हमसे 5 गुना बड़ी है, लेकिन वो रिसर्च पर 22 गुना ज्यादा खर्च करता है। 20 गुना बावजूद विकसित देशों जितनी तेज नहीं है। एक्सप्रेसवे और बड़े पोर्ट्स तो अच्छे बन गए, लेकिन गांवों या टियर-2 शहरों की हाईवे से कनेक्टिविटी अब भी दुरुस्त नहीं है। हालांकि सरकार ने 2 डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर शुरू किए हैं, जबकि 3 पर काम जारी है। उम्मीद है कि इससे माल ढुलाई में देरी कम होगी। गिरते रुपए को रोकने के लिए फिलहाल आरबीआई क्या कर रहा? देश की आर्थिक स्थिति की जिम्मेदारी भारतीय रिजर्व बैंक यानी आरबीआई की है। जब भी रुपया

(एक डॉलर के मुकाबले)

देश	करेंसी	1 जनवरी 2026	3 जून 2026	बदलाव (%)
इंडोनोशिया	इंडोनेशियन रुपिया	16,668	17,961.7	-7.8
भारत	भारतीय रुपया	89.96	95.7	-6.4
सा. कोरिया	सा. कोरियन वॉन	1,443.64	1,529.2	-5.9
फिलिपिनस	फिलिपाइन पेसो	58.9	61.7	-4.8
थाईलैंड	थाई बाट	31.48	32.7	-3.9
जापान	जापानी येन	156.87	159.6	-1.7
बांगलादेश	बांगलादेशी टका	120.8	122.7	-1.6
होंगकॉंग	होंगकॉंग डॉलर	7.79	7.84	-0.6
ताईवान	न्यू टाईवान डॉलर	31.3	31.45	-0.5
वियतनाम	वियतनामी डॉंग	26,295	26,346	-0.2
पाकिस्तान	पाकिस्तानी रुपया	279.8	278.4	+0.5
सिंगापुर	सिंगापुर डॉलर	1.29	1.28	+0.8
मलेशिया	मेलेशियन निंगिट	4.05	3.99	1.5
चीन	युआन	7	6.76	3.4

नोटः– सभी आंकड़े एक डॉलर के मुकाबले हैं और राउंड ऑफ किए गए हैं।

हैं। इकोनॉमिक्स का सबसे बुनियादी उसूल है- जिसकी मांग ज्यादा, उसकी कीमत ज्यादा। दुनिया का 88फीसदी कारोबार डॉलर में होता है। तो सभी देश डॉलर रखना ही चाहेंगे। इसी के चलते सभी देशों के पास जितनी भी विदेशी करेंसी है, उसमें करीब 57फीसदी तो डॉलर ही है। इसीलिए रोकड़ मंडी में भी डॉलर को ग्लोबल करेंसी मान लिया गया है। अब इसी के आधार पर बाकी देशों की करेंसी नापी-जोखी जाती है। फिलहाल रोकड़ मंडी में डॉलर की मांग बहुत ज्यादा है। भारत में भी डॉलर जितना आ रहा है, उससे ज्यादा खर्च हो रहा है। इसलिए रुपया तेजी से गिर रहा है। इस वक्त 1 डॉलर 95 रुपए के आस-पास ट्रेड कर रहा है। ये तो हुई सिंपल परिभाषा। अब जानिए वो फैक्टर जिनकी वजह से रुपया इतना तेजी से टूटा-1. कच्चे तेल का दाम बढ़ा, ज्यादा डॉलर खर्च करने पड़े-भारत अपनी खपत का 85फीसदी से ज्यादा तेल विदेशों से खरीदता है। इसकी पेमेंट सिर्फ डॉलर में हो सकती है। देश के इम्पोर्ट बिल में 22फीसदी की हिस्सेदारी के साथ तेल पहले नंबर पर है। ईरान जंग के दौरान कच्चे तेल के दाम 72 डॉलर से बढ़कर 126 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गए थे। 3 जून को भी भाव 88.7 डॉलर पर है। क्रेडिट रेटिंग एजेंसी आईसीआरए के मुताबिक, कच्चे तेल का भाव 10 डॉलर बढ़ने पर भारत के इम्पोर्ट बिल पर 14-16 बिलियन डॉलर का अतिरिक्त बोझ पड़ता है। तेल खरीदने के लिए ज्यादा डॉलर की जरूरत पड़ने से रुपया कमजोर हो गया। 2. विदेशी निवेशकों ने भारत से अंधाधुंध डॉलर निकाले-भारत में विदेशी निवेशक दो तरह से पैसा लगाते हैं। पहला- शेयर बाजार में एफआईआई (फॉरेन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर) से। दूसरा- किसी कंपनी, व्यापार या इंफ्रास्ट्रक्चर में सीधे एफडीआई (फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट) से। 2025 में विदेशी निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजार से 1.66 लाख करोड़ रुपए निकाले थे। 2026 के शुरुआती 5 महीनों में ही 2.26 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा निकाल चुके हैं। विदेशी निवेशक शेयर बाजार से डॉलर में पैसा निकालते हैं। इससे मार्केट में डॉलर की डिमांड बढ़ती है, जिससे रुपया टूटता है। अर्थशास्त्री डॉ. शरद कोहली कहते हैं कि सितंबर 2024 के बाद से विदेशी निवेशक मुनाफा कमाकर भारत से पैसा निकाल रहे हैं। भारतीय शेयर बाजार का पीई रेशियो दूसरे उभरते बाजारों से ज्यादा है। पीई रेशियो, यानी निवेशक एक रुपए की कमाई के लिए कितने रुपए लगा रहा है। इसी तरह एफडीआई देश में डॉलर आने का बड़ा जरिया है। भारत

लगाया उतना निकाल लिया है। 3. रुपया टूटने की अटकलबाजी से रुपया और टूटा-अर्थशास्त्री डॉ. जयति घोष मानती हैं कि घरेलू ट्रेडर्स बार-बार कयास लगा रहे हैं कि रुपया और गिरेगा। वे इस पर सट्टा खेल रहे हैं। इन अटकलबाजियों से रुपया लगातार टूट रहा है। अर्थशास्त्री प्रो. अरुण कुमार बताते हैं कि घरेलू अटकलबाजियों के चलते भारतीय एक्सपोर्टर्स ने अपनी कमाई के डॉलर विदेशों में रोक रखे हैं। उन्हें उम्मीद है कि रुपया और गिरेगा, जिससे डॉलर के बदले ज्यादा रुपए मिलेंगे। वहीं भारतीय इम्पोर्टर्स ज्यादा खरीदी कर रहे हैं। उन्हें डर है कि रुपया टूटने पर सामान महंगा पड़ेगा। एक्सपर्ट्स कहते हैं कि इन अटकलबाजियों के चलते विदेशी निवेशक और विदेशों में रह रहे भारतीय, यानी एनआरआईस भी देश में जमा या निवेश किया हुआ पैसा निकाल रहे हैं।4. भारतीय अर्थव्यवस्था पर भरोसे की कमी-अर्थशास्त्री प्रो. अरुण कुमार बताते हैं, 'डोनाल्ड ट्रम्प के सत्ता संभालने के बाद भारत पर 50फीसदी तक टैरिफ लगाया। इंटरनेशनल मॉनिटरी फंड, यानी आईएमएफ ने भारत की जीडीपी कैलकुलेशन पर सवाल उठाए। इनके चलते निवेशकों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर भरोसा कम हुआ। इसलिए भारत में डॉलर कम आ रहे हैं।' इसके अलावा 'डॉलर इंडेक्स' में भी तेजी आई है। डॉलर इंडेक्स 6 बड़ी करेंसी- यूरो, जापानी येन, ब्रिटिश पाउंड, कनाडाई डॉलर, स्वीडिश क्रोना और स्विस फ्रैंक के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति दिखाता है। ईरान जंग शुरू होने के बाद ये 97.6 से 99 तक पहुंच गया। बीच में 100 के पार भी गया।

इसका मतलब है कि पूरी दुनिया में डॉलर की डिमांड बढ़ी है, जिसके चलते डॉलर मजबूत हो रहा है। ऐसे में सवाल उठता है- जब चीन-पाकिस्तान की करेंसी मजबूत हुई, फिर भारत से कहां चूक रही? 2004 से 2014 के बीच, यानी 10 साल में डॉलर के मुकाबले रुपए 45 से गिरकर 59 तक पहुंचा, यानी 31.1फीसदी गिरा।

औसतन हर साल करीब 3फीसदी की गिरावट। वहीं 2014 के बाद, यानी पिछले पिछले 12 सालों में रुपया 61फीसदी टूटा। यानी हर साल औसतन 5फीसदी गिरा।

एक्सपर्ट्स मानते हैं कि भारत सरकार से मोटे तौर पर 3 चूक हो रही हैं-1. नई तकनीक में निवेश नहीं, तो कमाई कहां से होगी? दुनियाभर में एआई और न्यू टेक्नोलॉजी की क्रांति मची है। अमेरिका इसमें हर साल 500 अरब डॉलर और चीन 80 अरब डॉलर खर्च कर रहा है, जबकि भारत

बड़ी इकोनॉमी वाला अमेरिका तो 100 गुना ज्यादा। प्रो. अरुण कुमार कहते हैं कि जब नई तकनीक बनेगी ही नहीं, तो दुनिया को क्या बेचेंगे? जब बेचेंगे नहीं, तो डॉलर कहां से आएगा? ऐसे में सरकार आर एंड डी पर ज्यादा खर्च करे। इंस्टीट्यूट्स और यूनिवर्सिटीज में रिसर्च का माहौल बने। सरकार के साथ प्राइवेट सेक्टर भी आर एंड डी पर खर्च बढ़ाए। नहीं तो एआई के दौर में उन्हें भारी नुकसान होगा। 2. तकनीक नहीं, तो ज्यादा सामान कैसे बनेगा? बेहतर तकनीक नहीं होने के कारण भारत मैन्युफेक्चरिंग, यानी सामान बनाने के मामले में बहुत पीछे है। इसके चलते भारत एक कंज्यूमर मार्केट बनकर रह गया है। डॉ. कोहली कहते हैं, सरकार ने मैन्युफेक्चरिंग को बढ़ावा देने के लिए 'मेक इन इंडिया' शुरू किया, लेकिन इसका शेर धीरे से गरजा। वहीं जो स्टार्ट-अप या बिजनेस शुरू हो रहे हैं, वो ज्यादातर सर्विस और एप-बेस्ड हैं। जैसे- डिलिवरी एप, ई-कॉमर्स एप, मेड सर्विस। ये काम के हैं, लेकिन इनसे विदेशी मुद्रा नहीं कमाई जा सकती। देश में ज्यादा डॉलर तब आता है, जब हम कुछ बनाकर दुनिया को बेचते हैं- चाहे इलेक्ट्रिक सॉकेट हो या फाइटर जेट का इंजन। डॉ. कोहली सलाह देते हैं कि सरकार को स्कूल-कॉलेज से ही बच्चों को इलेक्ट्रॉनिक्स, टेक्सटाइल या दूसरे प्रोडक्ट बनाने की ट्रेनिंग देनी चाहिए। साथ ही सरकार और प्राइवेट सेक्टर दोनों को मिलकर मैन्युफेक्चरिंग इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करना चाहिए। 3. ज्यादा सामान नहीं बनेगा, तो बेचेंगे क्या? ज्यादा डॉलर न आने में यही सबसे बड़ी समस्या है। 2025-26 में भारत ने 860 अरब डॉलर का सामान बेचा, लेकिन 979 अरब डॉलर का खरीदा। यानी 119 अरब डॉलर का घाटा। भारत सबसे ज्यादा पेट्रोलियम प्रोडक्ट (पेट्रोल-डीजल), सोना-चांदी के गहने और दवाइयां विदेशों में बेचता है, लेकिन इनमें मुनाफा कम होता है। जबकि जिनमें मुनाफा ज्यादा है, जैसे- इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी, ऑटो पार्ट्स वगैरह उनमें भारत कहीं पीछे है।

चीन, वियतनाम और ताइवान इसमें आगे हैं। प्रो. अरुण और डॉ. कोहली दोनों ही मानते हैं कि अगर रुपए को लंबे वक्त तक मजबूत रखना है, तो सरकार को एक्सपोर्ट और उससे जुड़ी पॉलिसी को मजबूत करना होगा। इसमें लॉजिस्टिक्स यानी माल पहुंचाने की दिक्कत भी है। वर्ल्ड बैंक के लॉजिस्टिक्स परफॉर्मेंस इंडेक्स में भारत 38वें नंबर पर है। क्योंकि बॉर्डर और बंदरगाहों पर कस्टम्स क्लियरेंस की प्रोसेस डिजिटल होने के

डूबता है, तो आरबीआई उसे संभालने के लिए अपने विदेश मुद्रा भंडार से डॉलर या ट्रेजरी बॉन्ड बाजार में बेचता है। इससे रुपए की डिमांड बढ़ती है और गिरावट धीमी पड़ जाती है। इसे रूपी-डॉलर स्वैप कहा जाता है।2025-26 में आरबीआई ने 53.1 अरब डॉलर बेचे, जो पिछले कारोबारी साल से करीब 12 अरब डॉलर ज्यादा थे। 21 मई 2026 को आरबीआई ने कम से कम 2 अरब डॉलर और 26 मई को 5 अरब डॉलर बेचे। प्रो. अरुण मानते हैं कि रुपए को कभी तेजी से नहीं गिरने देना चाहिए और इसके लिए आरबीआई को दखल देना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होगा, तो बाजार के सट्टेबाज रुपए को और ज्यादा गिराएंगे। उत्पादन और निवेश घट जाएंगे। इससे अर्थव्यवस्था में हाहाकार मच जाएगा। डॉ. कोहली के मुताबिक, आरबीआई ने देखा कि रुपया 97 का आंकड़ा पार कर सकता है। इसे रोकने के लिए उसने डॉलर बेचे। क्योंकि साइकोलॉजिकल और पॉलिटिकल तौर पर रुपए का गिरना अच्छा नहीं माना जाता और ये मुद्दा बन सकता है। ऐसे में शायद आरबीआई और डॉलर बेचें।इसी के चलते आरबीआई का विदेशी मुद्रा भंडार पिछले एक साल के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया है। 22 मई को जारी आंकड़ों के मुताबिक, आरबीआई का विदेशी मुद्रा भंडार 681.4 अरब डॉलर पर आ गया है, जो पिछले हफ्ते 688.89 अरब डॉलर से ज्यादा था। हालांकि इतने भंडार से 10 महीने का खर्च चलाया जा सकता है। क्या जल्द ही रूपया 100 का आंकड़ा छू सकता है? 16वें वित्त आयोग के अध्यक्ष और अर्थशास्त्री अरविंद पनगढ़िया ने तो आरबीआई को सलाह तक दे डाली कि रुपए को 100 तक गिरने दो। वे मानते हैं कि तेल की कमी अस्थायी हो या लंबे वक्त तक चले, रुपए का गिराना ही सबसे व्यवहारिक उपाय होगा। 100 सिर्फ एक नंबर है, जैसे 99 और 101 हैं। डॉ. घोष कहती हैं कि रुपए को 100 तक गिरने देना अच्छी बात नहीं। क्योंकि इससे हमारे लिए कच्चे तेल, सोना और तमाम चीजों के दाम बढ़ जाएंगे। कुछ लोगों को लगता है कि रुपए के गिरने से भारत कहीं पिछड़ रहा है? यह सोच पुरानी है। उन्हें समझना चाहिए कि भारत इम्पोर्ट ड्रिवन इकोनॉमी है, यानी हम समान बेचने से कहीं ज्यादा खरीदारी करते हैं। वहीं, आरबीआई और सरकार को इसके लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। डॉ. कोहली मानते हैं कि रुपए का 100 तक पहुंचना इस पर निर्भर करता है कि तेल के दाम कहां रुकेंगे, भारत में क्या विदेशी निवेश फिर से आएंगे, एनआरआईज कितना मनी ऑर्डर भारत भेजेंगे और आरबीआई रुपए को संभालने के लिए कब तक और कितना डॉलर बेचेगा।

सोनभद्र में एक तेंदुआ सफारी व एक कृषि वानिकी विश्वविद्यालय खनन निधि से बने- संदीप मिश्र

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। आज जनपद के समस्त परिवारि जनो को पर्यावरण दिवश की हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

देते हुए पर्यावरण संरक्षण का अदभुत कार्यक्रम किसान नौज संघर्ष मोर्चा ने कलेक्ट्रेट पर किया जहां पर सैकड़ों कार्यकर्ता हाथों में आम का पेड़ लेकर उसे लगाने व बचाने का मोर्चा संयोजक के साथ संकल्प लिए साथ ही मोर्चा संयोजक ने मुख्यमन्त्री जी को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सोनभद्र में जो अडानी ग्रुप को विन्ध्य पर्वत दिया गया है उस पर रोक लगायी जाय साथ ही यहाँ के खनीज सम्पदा के दोहन से प्राप्त खनन निधि की बन्दर बाट न करके उससे एक तेंदुआ सफारी बनायी जाय जिससे पर्यटन बढ़ेगा रोगार सृजन होगा नौजवान को काम मिलेगा तथा एक कृषि वानिकी विश्वविद्यालय बनाया जाय जिससे किसानों में खुसहाली आयेगी एक पत्र इस बिषय पर मुख्यमन्त्री जी को सम्बोधित एडिएम को दिया गया आज के कार्यक्रम में विन्दू खरवार मुखलाल चेरो आकाश चौहान दिनेश चेरो राजेस पनिका सन्जय बियार धीरज कनौजिया अमन पासवान सम्भु हरिजन नगेन्द्र धागर विकास पटेल राजू मौर्य दिनेश यादव प्रमोद तिर्की राजू पासवान व सोभावती बिन्द पिन्की बियार बासमती चेरो व सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

रौप में 'जेम्स वंडर लैंड' रिसॉर्ट एवं वाटर पार्क का हुआ भव्य उद्घाटन

जिला पर्यटन अधिकारी व राजेंद्र प्रसाद जैन ने किया शुभारंभ, पर्यटन व रोजगार को मिलेगा बढ़ावा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। बुधवार को रौप स्थित पंचमुखी महादेव मंदिर के पीछे भव्य

रिसॉर्ट एवं वाटर पार्क 'जेम्स वंडर लैंड' का उद्घाटन किया गया। मुख्य अतिथि जिला पर्यटन अधिकारी राजेश कुमार भारती एवं प्रकाश जीनियस एजुकेशनल सोसाइटी के सचिव राजेंद्र प्रसाद जैन ने संयुक्त रूप से फीता काटकर शुभारंभ किया। इस अवसर पर प्रबंधक राजेंद्र प्रसाद जैन ने कहा कि यह रिसॉर्ट एवं वाटर पार्क लोगों को आधुनिक सुविधाओं के साथ मनोरंजन और विश्राम का उत्कृष्ट केंद्र प्रदान करेगा। परिसर में बच्चों और परिवारों के लिए विशेष आकर्षण, सुरक्षित जल क्रीड़ा सुविधाएं, हरियाली से भरपूर वातावरण तथा उच्चस्तरीय आतिथ्य सेवाएं उपलब्ध कराई गई हैं। मुख्य अतिथियों ने परियोजना की सराहना करते हुए कहा कि इससे क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा तथा स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

उन्होंने प्रकाश जीनियस एजुकेशनल सोसायटी के इस प्रयास को क्षेत्र के विकास की दिशा में सराहनीय पहल बताया। नए मनोरंजन केंद्र के शुभारंभ से क्षेत्रवासियों में उत्साह का माहौल है। लोगों ने इसे परिवारों के लिए एक बेहतरीन पर्यटन एवं मनोरंजन स्थल बताया। इस अवसर पर योग गुरु संकट मोचन, प्रमोद महाविद्यालय के प्रबंधक, संतोष कुमार पांडे, सुरेंद्र यादव, अरिहंत जैन, अभय कुमार शुक्ला, संध्या, हरियाली से भरपूर वातावरण तथा कृष्ण यादव, शिवम, संतोष केसरी, संतोष कुमार, पूर्णिमा आदि उपस्थित रहे।

मा0 मंत्री मनोज कुमार पाण्डेय ने विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण अभियान का किया शुभारंभ

वृक्ष न केवल पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ एवं स्वस्थ जीवन का आधार भी हैं - डॉ0 मनोज पाण्डेय,यह अभियान भावनात्मक जुड़ाव के साथ-साथ समाज में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना को भी मजबूत करता है - मा0 मंत्री

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मा0 मंत्री खाद्य एवं रसद तथा नागरिक आपूर्ति विभाग उ0प्र0 सरकार डॉ0 मनोज कुमार पाण्डेय ने आज विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर जनपद के विकास खण्ड राही अंतर्गत ग्राम कटिहार (पोस्ट भाव) में 'एक पेड़ मां के नाम' थीम के तहत वृक्षारोपण कर वृहद वृक्षारोपण अभियान का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर उन्होंने अपनी माताजी के नाम एक पौधा रोपित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। मा0 मंत्री ने कहा कि देश में आज मा0 प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर ''एक पेड़ माँ के नाम'' अभियान का शुभारम्भ हुआ है, जिसका आज मुझे शुभ अवसर मिला है और मैंने अपनी माँ के नाम एक पेड़ लगाकर जनपद में वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। मै लोगों से आहवान करता हूँ अपने जनपद के लोगों से अपने क्षेत्र के लोगों से कि इस दिन को यादगार बनाये और अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें। अपनी माँ जीवन का आधार भी हैं। उन्होंने कहा कि 'एक पेड़ मां के नाम'

के नाम पौध रोपण कर उनकी नियमित देखभाल करें यह हमारा अपनी माँ के प्रति सम्मान होगा। मा0 मंत्री ने उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि वृक्ष न केवल पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ एवं स्वस्थ अभियान भावनात्मक जुड़ाव के साथ-साथ समाज में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना को भी मजबूत करता है।

उन्होंने सभी नागरिकों से अपील की कि वे अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें तथा लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल सुनिश्चित करें, ताकि वे विकसित होकर पर्यावरण संरक्षण केवल एक दिन का कार्य नहीं, बल्कि यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की सहभागिता आवश्यक है। डीएफओ प्रखर मिश्र ने बताया कि विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में जनपद में वृहद वृक्षारोपण कराये जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है जिसके अन्तर्गत आज जनपद के विभिन्न स्थानों पर लगभग 8 लाख पौधे रोपित कराये जायेंगे। इस अवसर पर जिला पूर्ति अधिकारी उबैर्दुरहमान, जिला युवा अधिकारी वर्तिका सिंह सहित सम्बन्धित अधिकारी/कर्मचारी व एनसीसी के छात्र/छात्राए तथा क्षेत्रीय निवासी उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया।

ग्राम मुसही में गर्भवती महिलाओं को बांटी गई निःशुल्क पोषण पोटली,सांसद छोटेलाल खरवार ने किया शुभारंभ, 48 महिलाओं को मिला लाभ

स्वस्थ माता, स्वस्थ बच्चा, स्वस्थ परिवार, स्वस्थ समाज का निर्माण,कुंज इनोवेशन ट्रस्ट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। बुधवार को विकास खण्ड रॉबर्ट्सगंज के ग्राम मुसही के सामुदायिक भवन में गर्भवती

महिलाओं के उत्तम स्वास्थ्य के लिए कुंज इनोवेशन ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क पोषण पोटली वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह आयोजन भारत सरकार के उपक्रम नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉरपोरेशन, दिल्ली के सीएसआर सहयोग से किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सपा सांसद छोटेलाल खरवार ने दीप प्रज्वलन कर किया। मुख्य अतिथि द्वारा 48 गर्भवती महिलाओं को पोषण पोटली वितरित की गई, जिसमें मूंगफली, सोयाबीन, राजमा, गुड़ व लाई जैसी पोषक सामग्री शामिल थी। सांसद ने सभी महिलाओं के स्वास्थ्य लाभ की कामना की। खरवार ने कहा कि गर्भावस्था में माताओं-बहनों को अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए। आहार में प्रतिदिन पौष्टिक सामग्री बढ़ाएं और सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ लें। इस दौरान प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना की भी विस्तार से जानकारी दी गई। ट्रस्ट के विशेषज्ञों ने गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों के टीकाकरण के महत्व पर प्रकाश डाला। नएसएफडीसी लखनऊ के उप प्रबंधक रविंद्र नाथ गौण ने बताया कि सीएसआर के तहत पोषण पोटली का वितरण किया जा रहा है। आज बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग के सहयोग से चयनित 48 महिलाओं को लाभ मिला।

विभाग की अन्य योजनाओं का लाभ भी आगे जनपद के लोगों को दिया जाएगा।

ट्रस्ट की पदाधिकारी संजू कुशवाहा एवं मृत्युंजय ने कहा कि कुपोषण की रोकथाम व मातृ-शिशु स्वास्थ्य सुधार के लिए यह पहल की गई है। कार्यक्रम में महिलाओं को जागरूकता पोस्टर व लीफलेट भी वितरित किए गए।

सोनभद्र कचहरी में फर्जी अधिवक्ताओं-मुंशियों पर कसा शिकंजा,बार एसोसिएशन ने चलाया सघन जांच अभियान, बिना पंजीकरण मिले लोगों को परिसर से निकाला

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। सोनभद्र बार एसोसिएशन एवं डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को संपूर्ण कचहरी परिसर में बिना पंजीकरण कार्य कर रहे फर्जी अधिवक्ताओं एवं मुंशियों की पहचान के लिए सघन जांच अभियान चलाया गया। अभियान का नेतृत्व डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष जगजीवन सिंह एडवोकेट व पूर्व उपाध्यक्ष पवन कुमार सिंह एडवोकेट तथा सोनभद्र बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अशोक कुमार श्रीवास्तव एडवोकेट एवं महामंत्री योगेश कुमार द्विवेदी एडवोकेट ने किया। जांच के दौरान बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश में पंजीकृत अधिवक्ताओं की सूची से मिलान कर परिसर में मौजूद सभी व्यक्तियों के परिचय-पत्र व पंजीकरण प्रमाण-पत्र देखे गए। संदिग्ध व्यक्तियों को चिन्हित कर परिसर से बाहर किया गया और उनके खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई के लिए रिपोर्ट तैयार की जा रही है। सोनभद्र बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अशोक कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि बिना पंजीकरण के वकालत करना अधिवक्ता अधिनियम, 1961 का उल्लंघन है। न्यायिक व्यवस्था की गरिमा और वादकारियों के हितों की रक्षा हमारी प्राथमिकता है। यह अभियान नियमित चलाया जाएगा ताकि कचहरी परिसर दलाल-मुक्त रहे। डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष जगजीवन सिंह ने बताया कि फर्जी मुंशियों और अधिवक्ताओं द्वारा वादकारियों से धन उगाही की शिकायतें मिल रही थीं। यह अभियान वादकारियों को शोषण से बचाने का ठोस कदम है। सभी पंजीकृत अधिवक्ताओं से अनुरोध है कि वे मुवक्किलों को जागरूक करें और केवल अधिकृत मुंशियों को ही रखें। अभियान में योगेश कुमार द्विवेदी, पवन कुमार सिंह, ओम कुमार चतुर्वेदी, राजेश कुमार यादव, धीरज कुमार पांडेय, सुरेश सिंह कुशवाहा, अशोक पाठक, प्रवीण प्रताप सिंह, आशीष मिश्रा मंटू, टीटू गुप्ता, शारदा मौर्य, संतोष यादव, कामता यादव सहित कई अधिवक्ता शामिल रहे।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

श्री महन्तू
अग्निशमन सुरक्षा अधिकारी नैनी, प्रयागराज
नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

10 साल का बेटा गाली देने लगा है,स्कूल के दोस्तों से एडल्ट गालियां सीख रहा है, बच्चे को बाहर के प्रभाव से कैसे बचाएं?

जयपुर। ऐसा होना बहुत जगहों पे देखा जाता हैं जब बच्चा घर के प्रोटेक्टेड माहौल को छोड़ बहार निकलता हैं वहां उसका परिचय किस्से होता हैं और उसका परिवेश कैसा हैं महत्वपूर्ण हैं इसी

विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से -सवाल- मैं यूपी के आगरा से हूं। मेरा बेटा 10 साल का है। वह पढ़ने-लिखने में काफी अच्छा है। लेकिन हाल ही में एक घटना ने हमें सोचने पर मजबूर कर दिया। किसी छोटी बात पर उसने एडल्ट गाली (फाउल वर्ड) इस्तेमाल की। जब हमने प्यार से पूछा कि उसने यह कहां सीखा, तो बताया कि स्कूल में उसके दोस्त भी ऐसा बोलते हैं। हम घर में हमेशा सही भाषा का इस्तेमाल करते हैं और उसे अच्छे व्यवहार की सीख देते हैं। ऐसे में मुझे समझ नहीं आ रहा कि सही माहौल के बावजूद वह बाहर से ऐसी चीजें कैसे सीख रहा है। उसे बाहरी इन्फ्लुएंस से कैसे बचाएं और गाली देना गलत है, यह कैसे समझाएं? प्लीज गाइड मी। जवाब- सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि 8-12 साल की उम्र में बच्चे अपने आसपास की भाषा, व्यवहार और रिएक्शन बहुत तेजी से कॉपी करते हैं। इसलिए अगर बच्चा गाली दे तो इसका मतलब यह नहीं कि उसकी परवरिश गलत हो रही है। बच्चे गाली का मतलब अक्सर बिना समझे 'मजेदार', 'कूल' या 'अटेंशन पाने वाला शब्द' मानकर दोहराते हैं। यहां सबसे जरूरी बात यह है कि इस पर माता-पिता कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। पहले ये समझें कि बच्चे आखिर गाली कैसे सीखते हैं। बच्चे गाली कैसे सीखते हैं? बच्चे अपने आसपास के माहौल को देखकर, सुनकर और उसकी नकल करके भाषा सीखते हैं। कई बार उन्हें किसी शब्द का मतलब भी नहीं पता होता, लेकिन वह दूसरों की प्रतिक्रिया देखकर उसे दोहराने लगते हैं। इसलिए यह समझना जरूरी है कि बच्चा गाली कहां से और किन परिस्थितियों में सीख रहा है, तभी उसे रोका जा सकता है। आमतौर पर बच्चे इन वजहों से गाली सीखते हैं- दूसरो से सुनकर, घर के माहौल, स्कूल के दोस्तों से, मो/टीवी कंटेंट से। बच्चे गाली क्यों देते हैं? हर बार गाली देना बदतमीजी या खराब परवरिश की निशानी नहीं है। छोटे बच्चे अक्सर किसी का ध्यान आकर्षित करने, अपनी भावनाएं व्यक्त करने या दोस्तों के बीच खुद को बड़ा और स्मार्ट दिखाने के लिए ऐसे शब्द बोल देते हैं। कई बार वे गुस्सा, निराशा या हताशा को शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाते, इसलिए भी गाली का सहारा लेते हैं। बच्चे गली क्यों देते हैं- अटेंशन पाने के लिए। 'कूल' दिखने के लिए। गुस्सा जताने के लिए। भावनाएं व्यक्त करने के लिए। पेरेंट्स क्या करें? सबसे पहले शांत माहौल में बच्चे से बात करें। उससे पूछें- 'क्या तुम्हें पता है इसका मतलब क्या होता है?' 'अगर कोई तुम्हें ऐसे बोले तो कैसा लगेगा?' इस तरह की बातचीत बच्चे की सोचने-समझने की क्षमता बढ़ाती है। बच्चे को बताना जरूरी है कि ये शब्द दूसरों को चोट पहुंचा सकते हैं। बच्चे को क्या समझाना चाहिए?उसे यह बताना जरूरी है कि हर शब्द का अपना एक मतलब और असर होता है। इसके लिए बच्चे से कहें- गाली देना 'बड़ा' या 'स्मार्ट' होने की निशानी नहीं है। गुस्सा, मजाक या निराशा जताने के और भी तरीके हो सकते हैं।

आप उसे कुछ 'रिप्लेसमेंट वर्ड्स' भी सिखा सकते हैं। जैसे गुस्सा आए तो गाली की जगह 'ओह नो', 'ये सही नहीं है', 'मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है' जैसे शब्द इस्तेमाल करे। बच्चे गली दे तो क्या करें? दोस्त बनकर बात करें। सही-गलत का फर्क बताएं। बिना जजमेंट के सुनें। उदाहरण देकर समझाएं। खुद रोल मॉडल बनें। शब्दों की ताकत बताएं। पॉजिटिव शब्द सिखाएं । टीचर्स से बात करें। ऑनलाइन कंटेंट मॉनिटर करें। घर में खुशी का माहौल बनाएं। स्थिति को संभालने के 5 प्रभावी तरीके- ऐसी स्थिति में पेरेंट्स को रोल नहीं, रिस्पॉन्स बदलने की जरूरत है। 1. उस पल की प्रतिक्रिया तय करेगी आगे का व्यवहार- जब बच्चा पहली बार गाली देता है तो पेरेंट्स अक्सर शॉक या गुस्से में रिएक्ट करते हैं। लेकिन यही सबसे बड़ी गलती होती है। क्या करें? शांत रहें और उस समय ज्यादा प्रतिक्रिया न दें। बाद में अकेले में बात करें। क्यों? अगर आप बोले तो तुम्हें कैसा लगेगा?' इससे बच्चे में दूसरों की भावना समझने की क्षमता विकसित होती है। 3. 'विकल्प' देना जरूरी-अगर बच्चा गुस्सा या फ्रस्टेशन निकालने के लिए गाली देता है तो उसे बताएं कि गुस्सा आने पर- अपनी फीलिंग्स शब्दों में बताए। थोड़ा रुककर बोले। इसके लिए सही वाक्य हो सकते हैं- 'मुझे अच्छा नहीं लग रहा।' 'मुझे गुस्सा आ रहा है।' यह टेक्नीक 'बिहेवियर रिप्लेसमेंट' कहलाती है और बहुत इफेक्टिव होती है। 4. दोस्तों से दूर करने की बजाय समझ विकसित करें- बहुत से पेरेंट्स सोचते हैं कि बच्चे को उन दोस्तों से दूर कर देना चाहिए। लेकिन यह हमेशा प्रैक्टिकली पॉसिबल नहीं होता और उल्टा बच्चा रिबेल (विद्रोही) भी बन सकता है। बेहतर तरीका क्या है? बच्चे से खुलकर बात करें। उससे पूछें- 'तुम्हें क्या लगता है, ये सही है?' 'अगर सब कर रहे हैं, तो क्या वो सही है?' इससे बच्चे में इंडिपेंडेंट थिंकिंग ऐसे में चाइल्ड साइकोलॉजिस्ट या काउंसलर की मदद लेना बेहतर है। अंत में यही कहूंगी कि बच्चे को बाहरी दुनिया से पूरी तरह अलग रखना संभव नहीं है। लेकिन उसे सही सोच, संवेदनशीलता और सम्मानजनक व्यवहार सिखाया जा सकता है। अगर घर में खुला माहौल हो, जहां बच्चा बिना डर अपनी बात कह सके और माता-पिता धैर्य के साथ उसे गाइड करें, तो वह धीरे-धीरे सही और गलत में फर्क समझने लगता है।

टीम इंडिया न्यूजीलैंड का सबसे बड़ा घरेलू दौरा करेगी,खेले जाएंगे- 5 वनडे, 5 टी-20 और 2 टेस्ट,6 साल बाद हो रहा टेस्ट मैच

नयी दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम इस साल अक्टूबर से दिसंबर के बीच न्यूजीलैंड का दौरा करेगी। न्यूजीलैंड क्रिकेट (एनजेडसी) ने होम समर सीजन 2026/27 के तहत इस मल्टी-फॉर्मेट सीरीज का शेड्यूल जारी कर दिया है। दौरे पर भारत और न्यूजीलैंड के बीच 5 टी-20, 5 वनडे और 2 टेस्ट मैच खेले जाएंगे। न्यूजीलैंड क्रिकेट के मुताबिक, मैचों की संख्या के लिहाज से यह न्यूजीलैंड के इतिहास का सबसे बड़ा घरेलू दौरा होगा। दौरे की शुरुआत 22 अक्टूबर से व्हाइट-बॉल सीरीज के साथ होगी। इसके बाद वेलिंगटन और क्राइस्टचर्च में दो टेस्ट मैच खेले जाएंगे। इस दौरे की 5 मैचों की वनडे सीरीज न्यूजीलैंड के फैंस के लिए खास रहेगी। फैंस को रोहित शर्मा और विराट कोहली को वनडे में लाइव खेलते देखने का मौका मिल सकता है। दोनों खिलाड़ी टी-20 इंटरनेशनल से संन्यास ले चुके हैं, लेकिन वनडे फॉर्मेट में खेल रहे हैं। अगले साल होने वाले वनडे वर्ल्ड कप को देखते हुए यह सीरीज दोनों टीमों के लिए तैयारियां पुख्ता करने का अहम मौका होगी। न्यूजीलैंड में 6 साल बाद टेस्ट खेलेगी टीम इंडिया; पिछली हार का बदला लेने उतरेगी- भारतीय टीम 2019/20 के बाद पहली बार टेस्ट सीरीज के लिए न्यूजीलैंड का दौरा करेगी। इस बीच न्यूजीलैंड की टीम दो बार भारत आ चुकी है। इसमें 2024/25 का दौरा भी शामिल है, जहां न्यूजीलैंड ने भारत को उसकी सरजमीं पर टेस्ट सीरीज में 3-0 से हराकर क्लीन स्वीप किया था। भारतीय टीम के पास न्यूजीलैंड को उसके घर में हराकर उस हार का बदला लेने का मौका होगा।

दोनों टेस्ट मैच वेलिंगटन के सेलो बेसिन रिजर्व और क्राइस्टचर्च के हेगले ओवल में खेले जाएंगे।

इस साल टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल में भिड़ चुकी हैं दोनों टीमें- इसी साल दोनों टीमों के बीच टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल खेला गया था। इससे पहले साल की शुरुआत में न्यूजीलैंड की टीम 8 व्हाइट-बॉल मैच खेलने भारत आई थी। न्यूजीलैंड ने वनडे सीरीज 2-1 से जीती थी, जबकि टी-20 सीरीज में भारत ने 4-1 से जीत दर्ज की थी। भारत के अलावा न्यूजीलैंड का होम समर सीजन व्यस्त रहेगा।

भारत के दौरे के बाद न्यूजीलैंड की महिला टीम बांग्लादेश के खिलाफ 3 टी-20 और 3 वनडे मैचों की मेजबानी करेगी। इसके बाद पुरुष टीम 4 टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलिया का दौरा करेगी। ऑस्ट्रेलिया दौरे से लौटने के बाद न्यूजीलैंड की टीम श्रीलंका की मेजबानी करेगी।

यह सीरीज जनवरी 2027 में 3 वनडे और 3 टी20 मैचों से शुरू होगी और 2 टेस्ट मैचों के साथ खत्म होगी।

क्रिकेट सीरीज़ शेड्यूल

मैच	डेट	वेन्यू
पहला टी20	22 अक्टूबर	हैंगली ओवल, क्राइस्टचर्च
दूसरा टी20	24 अक्टूबर	हेनरी स्टेडियम, वेलिंगटन
तीसरा टी20	27 अक्टूबर	
चौथा टी20	30 अक्टूबर	ईडन पार्क, ऑकलैंड
5वां टी20	1 नवंबर	सेडन पार्क, हैमिल्टन
पहला वनडे	4 नवंबर	ईडन पार्क, ऑकलैंड
दूसरा वनडे	7 नवंबर	हेनरी स्टेडियम, वेलिंगटन
तीसरा वनडे	10 नवंबर	सेडन पार्क, हैमिल्टन
चौथा वनडे	13 नवंबर	बे ओवल, तौरंगा
5वां वनडे	15 नवंबर	बे ओवल, तौरंगा
पहला टेस्ट	19-23 नवंबर	सेलो बेसिन रिजर्व, वेलिंगटन
दूसरा टेस्ट	27 नवंबर - 1 दिसंबर	हैंगली ओवल, क्राइस्टचर्च

ग्रैंड स्लैम इतिहास में पहली बार 2 इटैलियन में सेमीफाइनल,फ्रेंच ओपन में कोबोली-अर्नाल्डी के बीच मुकाबला-ज्वेरेव-मेंसिक भी टॉप-4 में

पेरिस। वर्ल्ड नंबर-1 जैनिक सिनर और लोरेंजो मुसेटी के बाहर होने के बावजूद फ्रेंच ओपन में इटली का दबदबा कायम है। ऑल-इटैलियन सेमीफाइनल पर कोबोली ने कहा- 'इटालियन टेनिस के लिए यह बेहद खुशी की बात है।' पिछले साल सिनर और मुसेटी हमवतन माटेओ बेरेटिनी के चोटिल होकर मैच छोड़ने से सेमीफाइनल का टिकट मिला। बेरेटिनी बाएं कूल्हे की चोट से जूझ रहे थे और दूसरे सेट में पीछे रहने के बाद मुकाबले से हट गए। ज्वेरेव-मेंसिक में दूसरा सेमीफाइनल- पुरुष एकल कैटेगरी का दूसरा सेमीफाइनल जर्मनी के एलेक्जेंडर ज्वेरेव और चेक खिलाड़ी जैकब मेंसिक के बीच खेला जाएगा।

ज्वेरेव ने स्पेन के राफेल जोदार को 7-6, 6-1, 6-3 से हराया। वहीं, मेंसिक ने ब्राजील के जोआओ फोन्सेका को 6-4, 6-3, 7-6 से हराया।

बुधवार रात फ्लावियो कोबोली और माटेओ अर्नाल्डी ने अपने-अपने मैच जीतकर मेंस सिंगल्स के सेमीफाइनल में जगह बना ली। अब शुक्रवार को दोनों के बीच सेमीफाइनल खेला जाएगा। यह ग्रैंड स्लैम इतिहास का पहला ऑल-इटैलियन मेंस सेमीफाइनल होगा। दोनों अंतिम चार में पहुंचे थे, लेकिन ड्रॉ के अलग-अलग हिस्सों में थे। कोबोली जीते, अर्नाल्डी के अपोनेंट ने मैच छोड़ा-24 वर्षीय कोबोली ने कनाडा के फेलिक्स ऑगर-अलियासिमे को 4-6, 6-4, 6-4 से हराकर अंतिम-4 में जगह बनाई। वहीं, अर्नाल्डी को फोन्सेका ने नोवाक जोकोविच को बाहर किया था। युगल में भी इटली का दबदबा-सारा एरानी और आंद्रेआ वावासोरी गुरुवार को मिश्रित युगल फाइनल खेलेंगे। वहीं, वावासोरी और सिमोने बोलेली पुरुष युगल के सेमीफाइनल में पहुंच चुके हैं।

गर्मियों में बढ़ती सन टैनिंग,डर्मेटोलॉजिस्ट से जानें टैनिंग से बचाव के टिप्स

नयी दिल्ली। गर्मियों में स्किन टैनिंग एक कॉमन प्रॉब्लम है। ज्यादा सन लाइट एक्सपोजर में युवी (अल्ट्रावायलेट) रेज से स्किन टैन हो सकती है। मामूली दिखने वाली टैनिंग कई बार मेलानोमा जैसे स्किन कैंसर का रिस्क बढ़ा सकती है। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' (डब्यूएचओ) के मुताबिक, दुनियाभर में मेलानोमा (स्किन कैंसर) के करीब 3.32 लाख मामलों में से लगभग 83फीसदी युवी रेडिएशन की वजह से होते हैं। यानी हर 10 में से 8 से ज्यादा केस सनलाइट एक्सपोजर और टैनिंग से जुड़े हैं। इसलिए आज 'जरूरत की खबर' में जानेंगे कि- स्किन टैनिंग क्या होती है? किन लोगों को ज्यादा रिस्क होता है? इससे बचाव के लिए क्या करें? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. विजय सिंघल, सीनियर कंसल्टेंट, डर्मेटोलॉजी, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से- सवाल- टैनिंग क्या होती है? जवाब- टैनिंग स्किन का एक नेचुरल डिफेंस मैकेनिज्म है। यह सूरज की यूवी रेज के संपर्क में आने पर होता है। जब स्किन पर यूवी किरणें पड़ती हैं, तो शरीर मेलानिन नामक पिगमेंट का प्रोडक्शन बढ़ा देता है। यही मेलानिन स्किन को डार्क (सांवला) बना देता है। इसे टैनिंग कहते हैं। सवाल- गर्मियों में टैनिंग ज्यादा क्यों होती है? जवाब- गर्मियों में सनलाइट में यूवी किरणों की इंटेंसिटी बढ़ जाती है। इससे टैनिंग का रिस्क बढ़ जाता है। यह स्किन को जल्दी टैन करती है। पसीने और हल्के कपड़ों की वजह से स्किन ज्यादा एक्सपोज रहती है। सवाल- यूवी-ए और यूवी-बी किरणों में क्या अंतर है? इनमें से किस रेज के कारण टैनिंग होती है? जवाब- टैनिंग यूवी-बी किरणों की वजह से होती है। ये स्किन को डैमेज करती हैं और इनकी मौजूदगी में बॉडी बचाव के लिए ज्यादा मेलानिन बनाती है। हालांकि, यूवी-ए के एक्सपोजर से भी टैनिंग हो सकती है। इसके कारण स्किन में पहले से मौजूद मेलानिन डार्क हो जाता है। इसे 'इमीडिएट टैनिंग' कहते हैं। दोनों के बीच अंतर समझिए- यूवी-ए किरणें:-स्किन की गहराई (डर्मिस लेयर) तक पहुंचती हैं। धीरे-धीरे असर करती हैं, लेकिन लंबे समय में स्किन एजिंग (झुर्रियां, ढीलापन) का कारण बनती हैं। ये हर मौसम में एक जैसे रहती हैं। यूवी-बी किरणें:-स्किन की ऊपरी लेयर (एपिडर्मिस) पर असर करती हैं। तेज और तुरंत असर दिखाती हैं। सनबर्न (स्किन जलना) और रेडनेस का मुख्य कारण हैं। गर्मियों में इनकी इंटेंसिटी ज्यादा होती है। सवाल- मेलानिन क्या है और यह टैनिंग को कैसे बढ़ाता है? जवाब- ये स्किन, बाल और आंखों का रंग तय करने वाला एक नेचुरल पिगमेंट है। यह स्किन की सेल्स (मेलानोसाइट्स) में बनता है। यह टैनिंग को कैसे बढ़ाता है? जब स्किन पर यूवी किरणें पड़ती हैं, तो स्किन इसे रिस्क की तरह दर्ज करती है। इससे बचाव के लिए शरीर ज्यादा मेलानिन बनाने लगता है- यह मेलानिन स्किन की ऊपरी लेयर में जमा होकर यूवी किरणों को एब्जॉर्ब करता है। इसी वजह से स्किन का रंग गहरा (डार्क) हो जाता है। सवाल- क्या बार-बार टैनिंग होने से स्किन एजिंग बढ़ती है? जवाब- हां, यह स्किन एजिंग बढ़ा सकती है। यूवी किरणें स्किन के कोलेजन और इलास्टिन को तोड़ती हैं। इससे झुर्रियां और ढीलापन आता है। ये स्किन सेल्स को नुकसान पहुंचाते हैं और एजिंग प्रोसेस को तेज करते हैं। बार-बार टैनिंग से डार्क स्पॉट्स और अनइवेन स्किन टोन (कहीं डार्क, कहीं नॉर्मल) हो सकती है। लंबे समय तक एक्सपोजर से स्किन कमजोर हो सकती है। सवाल- किन लोगों को टैनिंग जल्दी होती है? जवाब- कुछ लोगों को टैनिंग का रिस्क ज्यादा होता है। जिनकी स्किन सेंसिटिव है। जो डीहाइड्रेटेड रहते हैं। जो आउटडोर जॉब करते हैं। जो सनस्क्रीन नहीं लगाते हैं। जो स्किन केयर नहीं करते। जो बिना टोपी, सनग्लास बाहर जाते हैं। सवाल- क्या हॉर्मोनल बदलाव (जैसे प्रेगनेंसी) से टैनिंग बढ़ती है? जवाब- हां, प्रेगनेंसी के दौरान टैनिंग और स्किन डार्क हो सकती है। दरअसल प्रेगनेंसी में एस्ट्रोजन और प्रोजेस्टेरोन जैसे हॉर्मोन बढ़ जाते हैं। ये हॉर्मोन स्किन की मेलानिन बनाने वाली सेल्स (मेलानोसाइट्स) को ज्यादा एक्टिव कर देते हैं। इससे स्किन में पिगमेंटेशन और टैनिंग जल्दी और ज्यादा दिखती है। सवाल- क्या सिर्फ धूप में जाने

क्या आपको ना कहना आता हैं ?

सबको खुश रखती हूं, सबकी बात मानती हूं, दिल 'ना' कहना चाहता है, लेकिन मुंह से 'ना' निकल ही नहीं पाता-ये आदत कैसे बदलूं?

नयी दिल्ली। यह एक ऐसी समस्या हैं जो फेस तो सब करते हैं लेकिन शेयर कोई नहीं कर पाता ऐसी विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से- सवाल- मैं 34 साल की शादीशुदा महिला हूं और स्कूल टीचर हूं। मेरी सबसे बड़ी समस्या यह है कि मैं किसी को 'ना' नहीं कह पाती। घर हो या ऑफिस, मैं हमेशा दूसरों की जरूरतों को अपनी जरूरतों से पहले रखती हूं। ऑफिस में सहकर्मी अक्सर अपना काम भी मुझसे करवा लेते हैं, क्योंकि उन्हें पता है कि मैं मना नहीं करूंगी। ससुराल वालों की भी हर बात मान लेती हूं। भले ही उससे मुझे मानसिक-शारीरिक थकान हो रही हो। मैं जानती हूं, लोग मुझे यूज करते हैं, लेकिन फिर भी मना करने में गिल्ट होता है। मैं खुद को बदलना चाहती हूं। इस आदत से बाहर कैसे निकलूं? सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। मदद करना अच्छी बात है, लेकिन जब दूसरों को खुश रखने के लिए आप अपनी जरूरतों और मानसिक शांति को नजरअंदाज करने लगें, तो यह आदत बोझ बन सकती है। 'ना' कहना गलत नहीं, बल्कि इमोशनल हेल्थ के लिए जरूरी है। समस्या की असली जड़ कहां हैं? क्या आप हर बात पर 'हां' कहती हैं। जब दिल 'ना' कहना चाहता है, तब भी आपके मुंह से 'हां' निकल जाता है। अगर आप ऐसा महसूस करती हैं, तो यह समझना जरूरी है कि समस्या सिर्फ आपकी 'अच्छाई' नहीं है। असली समस्या यह है कि आप भीतर से तो मना करना चाहती हैं, लेकिन कर नहीं पाती हैं। इसलिए हर बार 'हां' कह देती हैं। धीरे-धीरे इसका असर दिखाई देने लगता है और आप- थकने लगती हैं। मन में चिड़चिड़ापन आता है। लोगों पर गुस्सा आता है। खुद पर भी गुस्सा आता है। मानसिक और शारीरिक थकान के साथ कई बार खुद पर भी नाराजगी होने लगती है। फिर भी अगली बार आप दोबारा 'हां' कह देती हैं। यही चक्र बार-बार चलता रहता है। इसके पीछे अक्सर कुछ गहरे डर काम करते हैं, जैसेकि- 'अगर मैंने मना किया तो लोग बुरा मान जाएंगे।' 'अच्छी बहू, पत्नी या टीचर वही है, जो हमेशा सबके काम आए।' 'किसी बात के लिए ना कहना असल में स्वार्थी होना होता है।' 'अगर मैंने बाउंड्री ड्रॉ कर दी तो लोग मुझे पसंद नहीं करेंगे।' यानी बाहर से तो आप लोगों की मदद कर रही हैं, लेकिन अंदर से आपके कारण कुछ और हैं। आपके मन में डर और गिल्ट है और आपको सबके अप्रूवल की जरूरत है। यानी की आपकी 'हां' मदद के लिए कही गई 'हां' नहीं, बल्कि गिल्ट और डर से कही गई 'हां' है। इमोशनल पैटर्न- आप सोचती हैं, 'मैं तो बस सबका भला चाहती हूं।' लेकिन कई बार इसके पीछे सिर्फ मदद करने की भावना नहीं होती, बल्कि कुछ गहरे इमोशनल पैटर्न भी काम कर रहे होते हैं। हो सकता है कि आप टकराव से बचना चाहती हों। हो सकता है कि आपको रिजेक्शन या लोगों की नाराजगी का डर हो। हो सकता है, दूसरों की नाराजगी सहना आपके लिए मुश्किल हो। हो सकता है, आपने बचपन से यही सीखा हो कि प्यार और तारीफ पाने के लिए हमेशा 'हां' कहना जरूरी है। ऐसे में धीरे-धीरे यह सिर्फ एक आदत नहीं रहती, बल्कि आपकी पहचान का हिस्सा बन जाती है।फिर आप अपनी जरूरतों से पहले दूसरों की उम्मीदों को पूरा करने लगती हैं, चाहे इसके बदले आपको मानसिक थकान और भीतर ही भीतर नाराजगी क्यों न महसूस हो। अपने मनोविज्ञान को समझें-करें एक जरूरी सेल्फ एससमेंट टेस्ट-यहां हम आपको एक सेल्फ एससमेंट टेस्ट दे रहे हैं। इसमें 10 ब्लैंक कॉलम हैं। यहां आपको पिछले 7 दिनों की वो 10 सिचुएशंस लिखनी हैं, जब आपने 'हां' कहा। जैसेकि- पूजा ने बाजार जाने को कहा तो मैं उसके साथ चली गई। प्रभा ने स्कूल में अपनी क्लास लेने के लिए कहा तो मैंने हां कर दी।सभी सिचुएशंस से जुड़े 5 सवाल हैं, जैसेकि- 1. क्या मैं सचमुच यह करना चाहती थी? 2. मना करने पर कितना गिल्ट होता? 3. कितना डर था कि सामने वाला नाराज होगा? 4. हां कहने के बाद कितनी थकान या पछतावा हुआ? 5. इससे मेरे काम, आराम या स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ा? इन पांचों सवालों को आपको 0 से 4 के स्केल पर रेट करना है, अपना टोटल स्कोर निकालना है और अंत में अपने स्कोर की एनालिसिस करनी है। 4 हफ्ते का सीबीटी आधारित सेल्फ हेल्प प्लानः-सप्ताह 1 अपनी आदत को समझें, लक्ष्यः इस हफ्ते का लक्ष्य खुद को बदलना नहीं, बल्कि अपनी आदत को समझना है। ध्यान दें कि आप किन परिस्थितियों में बिना मन के 'हां' कह देती हैं। हर बार 'हां' कहने के बाद ये बातें नोट करेंः-सिचुएशन क्या थी? यानी सामने कौन था और क्या कहा गया? उस समय मन में क्या विचार आए? जैसे- 'अगर मना किया तो बुरा मान जाएंगे।' आपने क्या महसूस किया? जैसे- डर, गिल्ट, घबराहट या दबाव। आपने सामने वाले से क्या कहा? आप वास्तव में क्या कहना चाहती थीं? इस हफ्ते की छोटी प्रैक्टिस-तुरंत जवाब देने की बजाय यह वाक्य बोलने की आदत डालें:- 'मैं सोचकर बताऊंगी।' 'अभी तुरंत जवाब देना मुश्किल है।' 'मुझे थोड़ा समय चाहिए।' यह छोटा-सा पॉज आपको बिना सोचे 'हां' कहने से रोकने में मदद करेगा। सप्ताह 2:-अपने विचारों को चुनौती दें- लक्ष्यः हरेक गिल्ट को पहचानना और उसे परखना। कई बार हमारा डर सच नहीं, सिर्फ एक आदत होता है। एक उदाहरणः- विचार: 'अगर मैंने मना किया तो लोग मुझे बुरा समझेंगे।' अब खुद से ये सवाल पूछिएः क्या इसका कोई ठोस सबूत है?क्या हर हेल्दी रिश्ता एक 'ना' से टूट जाता है? क्या सामने वाला सच में इतना नाराज होगा, या ये सिर्फ मेरा डर है? क्या मैं किसी और को सलाह दूंगी कि वह हमेशा सबकी बात माने? क्या मैं दूसरों को खुश रखने के लिए खुद को लगातार थका रही हूं? अब एक नया बैलेंस्ड थॉट बनाइए। पुरानी सोच की जगह ज्यादा रियलिस्टिक और हेल्दी सोच विकसित करिएः 'ना कहना गलत नहीं है।' 'मेरी जरूरतें भी महत्त्वपूर्ण हैं।' 'हर बार उपलब्ध रहना जरूरी नहीं है।' 'खुद हमेशा परेशान रहने से बेहतर है, दूसरों को थोड़ा निराश करना।' सप्ताह 3:- छोटे-छोटे 'ना' का अभ्यास करें, लक्ष्यः छोटी-छोटी स्थितियों से ना बोलने की प्रैक्टिस करना। अब तक आपने अपने विचारों और पैटर्न को समझा। इस हफ्ते लो रिस्क वाली सिचुएशंस में 'ना' बोलने की प्रैक्टिस शुरू करें। शुरुआत छोटी बातों से करें, ताकि धीरे-धीरे आपका कॉन्फिडेंस बढ़े। यहां मैं आपको कुछ वाक्यों के उदाहरण दे रहा हूं- 'मैं समझती हूं कि आपको मदद चाहिए, लेकिन आज मैं यह नहीं कर पाऊंगी।' 'इस हफ्ते मेरा काम पहले से बहुत ज्यादा है, इसलिए मैं एक्स्ट्रा काम नहीं ले सकती।' 'अभी मैं आराम कर रही हूं, यह बाद में देखेंगे।''मैं इस बार नहीं कर पाऊंगी।' 'मैं मदद करना चाहती हूं, लेकिन अभी मेरे पास समय नहीं है।' 'ना' कहते समय इन बातों का ध्यान रखें- बहुत लंबा एक्सप्लेनेशन न दें। बार-बार 'सॉरी' न बोलें। झूठा बहाना बनाने की कोई जरूरत नहीं है। अपनी बात शांत और स्पष्ट तरीके से कहें। ब्रोकेन रिकॉर्ड टेक्नीक अपनाएं। यानी अगर सामने वाला दबाव डाले या बार-बार मनाने की कोशिश करे तो बहुत शांत स्वरों में अपनी बात दोहराएं। ब्रोकेन रिकॉर्ड टेक्नीक के कुछ उदाहरणः 'मैं इस बार नहीं कर पाऊंगी।' 'जैसाकि मैंने कहा, अभी यह संभव नहीं है।' 'अभी मेरे लिए यह पॉसिबल नहीं है।' इस टेक्नीक का मकसद बहस करना नहीं, बल्कि अपनी बाउंड्री को स्पष्ट करना है। सप्ताह 4:-बाउंड्रीज मजबूत करें, लक्ष्यः स्पष्ट और मजबूत बाउंड्रीज बनाना। अब तक आपने अपने पैटर्न समझे, विचारों को चैलेंज किया और छोटे-छोटे 'ना' बोलने का अभ्यास किया। इस हफ्ते फोकस है- अपनी बाउंड्रीज को स्पष्ट और मजबूत बनाना।इस हफ्ते कम-से-कम दो जगह बाउंड्रीज बनाएं:-एक बाउंड्री ऑफिस में तय करें। एक बाउंड्री घर में तय करें। अपनी 3 नॉन-नेगोशिएबल बाउंड्री लिखें। ऐसी बातें, जिन पर आप अब समझौता नहीं करेंगी। कुछ उदाहरणः मेरा रेस्ट टाइम बहुत जरूरी है। मैं अपना काम पहले पूरा करूंगी। बिना नोटिस के एक्स्ट्रा बोझ नहीं लूंगी। हर समय उपलब्ध रहना जरूरी नहीं है। अब खुद से ये सवाल पूछें:-कौन बार-बार मेरी बाउंड्री लांघता है? अगली बार मैं उससे ठीक-ठीक क्या कहूंगी? अगर सामने वाला नाराज हुआ तो मैं खुद को क्या याद दिलाऊंगी? ये 5 हेल्दी रिमाइंडर खुद को याद दिलाएं- 'मैं बुरी नहीं हूं, सिर्फ अपनी सीमा तय कर रही हूं।' 'हर रिक्वेस्ट को एक्सेप्ट करना मेरी जिम्मेदारी नहीं है।' 'ना कहना भी एक ईमानदार जवाब है।' 'दूसरों की अपेक्षाएं मेरी पहचान को तय नहीं करतीं।' 'मैं मददगार हो सकती हूं, लेकिन हमेशा उपलब्ध रहना जरूरी नहीं है।' याद रखिएःअच्छा इंसान होना और हर समय उपलब्ध रहना, दोनों अलग बातें हैं। दयालु होना अच्छी बात है, लेकिन खुद को इग्नोर करना दयालुता नहीं है। आपका लक्ष्य कठोर बनना नहीं है। लक्ष्य सिर्फ इतना है कि आप शांत, स्पष्ट और सम्मानजनक तरीके से अपनी सीमाएं तय कर सकें। अंतिम बातः-स्वस्थ रिश्तों की शुरुआत अपनी सीमाएं तय करने से होती है। 'ना' कहना स्वार्थ नहीं, सेल्फ रिस्पेक्ट है। जब आप गिल्ट के बावजूद शांत होकर अपनी जरूरतों को महत्व देना सीखते हैं, तभी असली इमोशनल हीलिंग शुरू होती है।

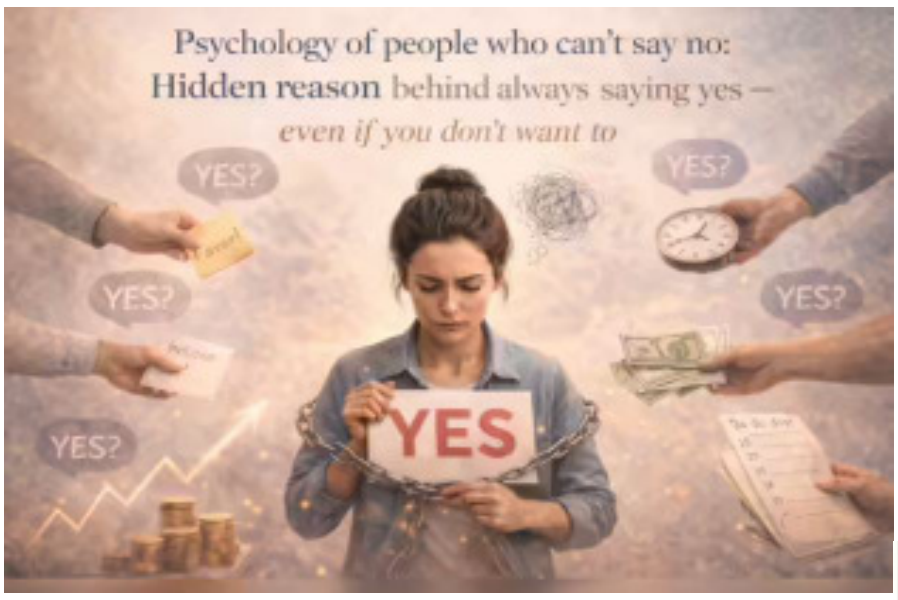

पहलाज निहलानी का 75 साल की उम्र में निधन,आंखें,शोला और शबनम जैसी बेहतरीन फिल्में बनाईं, गोविंदा को दिया था ब्रेक

मुंबई। डायरेक्टर- प्रोड्यूसर और सीबीएफसी (सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन) के अध्यक्ष रहे पहलाज निहलानी का 75 साल की उम्र में निधन हो गया है। वह कई दिनों से बीमार थे। उन्होंने रात 3 बजे आखिरी सांसें लीं। कोविड में तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें कुछ दवाइयों से कॉम्प्लिकेशन्स हो गए थे, जिससे उनकी किडनी पर असर पड़ा था। उनका इसी से संबंधित इलाज चल रहा था। फिल्म एसोसिएशन आईएमपीएए के प्रेसिडेंट अभय सिन्हा ने पहलाज निहलानी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा- 'वो कई दिनों से बीमार थे, हॉस्पिटल में थे। रात 3 बजे उनका देहांत हुआ है। बार-बार उनके हॉस्पिटलाइज होने की न्यूज आ रही थी। फिलहाल उनके निधन का कारण साफ नहीं है। इंडस्ट्री ने एक अच्छा इंसान खो दिया। एफडब्लूआईसीई के अध्यक्ष बीएन तिवारी ने उनके निधन की पुष्टि करते हुए उनके निधन का कारण हार्ट अटैक बताया है। बहुत बड़े प्रोड्यूसर थे। वो आईएमपीएए के भी चेयरपर्सन थे। बहुत बड़े-बड़े काम किए उन्होंने। शत्रुघ्न सिन्हा के बेहद क्लोज थे, उनकी हर पार्टी में पहुंचते थे।' पहलाज निहलानी का अंतिम संस्कार बीते दिन मुंबई के सांताक्रूज हिंदू श्मशान भूमि में हुआ। पहलाज निहलानी की पॉपुलर फिल्में- पहलाज निहलानी फिल्म प्रोड्यूसर हैं। उन्होंने शत्रुघ्न सिन्हा- रीना रॉय स्टारर 'हथकड़ी' (1982), गोविंदा- दिव्या भारती स्टारर 'शोला और शबनम' (1992), गोविंदा-चंकी पांडे स्टारर 'आंखें' (1993), अनिल कपूर-करिश्मा कपूर स्टारर 'अंदाज' (1994), अक्षय कुमार-करीना कपूर स्टारर 'तलाश' (2003), और गोविंदा स्टारर 'रंगीला राजा' (2019) जैसी फिल्में बनाई हैं। एक नजर पहलाज निहलानी के करियर पर- पहलाज निहलानी ने 1982 में बतौर प्रोड्यूसर पहली फिल्म हथकड़ी बनाई और यहीं से उनके फिल्मी सफर की शुरुआत हुई। इसके बाद 1985 में उनकी दूसरी फिल्म आंधी-तूफान रिलीज हुई, जिसने उन्हें बॉलीवुड में एक निर्माता के रूप में पहचान दिलाई। साल 1986 में उन्होंने फिल्म इल्जाम बनाई, जिसमें गोविंदा ने बॉलीवुड में डेब्यू किया। फिल्म हिट रही और गोविंदा को देशभर में पहचान मिली। इसके अगले ही साल 1987 में आई आग ही आग के जरिए चंकी पांडे ने बॉलीवुड में कदम रखा। इसी साल निहलानी ने गुनाहों का फैसला भी बनाई। 1990 के दशक में पहलाज निहलानी ने शोला और शबनम और आंखें जैसी सुपरहिट फिल्मों का निर्माण किया। खासकर आंखें उस दौर की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्मों में से एक साबित हुई और इसने उनकी सफलता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। खून की उल्टियां होने पर, 5 साल पहले 28 दिनों तक एडमिट रहे थे-पहलाज निहलानी को 5 साल पहले खून की उल्टियां हुई थीं, जिसके बाद वो 28 दिनों तक मुंबई के नानावटी अस्पाताल में भर्ती रहे थे। उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा था, 'एक रात अचानक से 3 बजे मुझे बेचैनी होने लगी और खून की उल्टियां भी हुईं। मुझे अस्पताल में भर्ती होने की सलाह दी गई। यह क्रोनिक फूड पॉइजनिंग का मामला था। लेकिन इमरजेंसी थी। शुरुआत में मुझे 5-6 दिनों तक आईसीयू में भर्ती रखा गया।' 'जब मैं आईसीयू से बाहर आया तो सोचा कि 2-3 दिन में मैं घर चला जाऊंगा। लेकिन लंबे समय तक मेरा टेम्परेचर कम नहीं हुआ। मुझे बुखार आ रहा था और शाम के वक्त पेट में भी बहुत दर्द हो रहा था। डायग्नोसिस बढ़ता गया और यह चिंता का विषय बन गया।' गोविंदा को दिया था करियर का पहला बड़ा ब्रेक-गोविंदा ने पहलाज निहलानी की फिल्म इल्जाम से बॉलीवुड डेब्यू किया था। आगे उन्होंने पहलाज निहलानी के साथ आंखें, शोला और शबनम जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्मों में काम किया। कुछ समय पहले ही उन्होंने लर्न फ्रॉम द लीजेंड के पॉडकास्ट में गोविंदा पर बात करते हुए कहा था, 'फिल्म आंधी तूफान के बाद मैं मिथुन चक्रवर्ती और शत्रुघ्न के साथ एक फिल्म बनाना चाहता था। लेकिन उस समय मिथुन और शत्रुघ्न 4-4 शिफ्ट करते थे। इस वजह से हमारी नहीं बनी। फिर रीक्कू राकेश, गोविंदा को मेरे पास लेकर आए। फोटोग्राफ भी लेकर आए, लेकिन मुझे पसंद नहीं आए। उसका लुक पसंद नहीं आया।' 'अगले दिन वो मेरे पास वीडियो कैसेट लेकर आया, जिसमें उसके डांस थे। उस समय ब्रेक डांस माइकल जैक्सन की वजह से पॉपुलर थे। उसने मुझे कैसेट दिखाया, तो मैंने पूछा क्या-क्या आता है। मुझे उसका चेहरा पसंद नहीं था, लेकिन उसका डांस और एक्शन पसंद आया। मेरी स्टोरी पूरी एक्शन थी, तो मैंने उससे एक दिन मांगा। मैं लंदन जा रहा था, तो मैं उससे कहकर गया कि तुम अपनी तैयारी करो।' आगे उन्होंने कहा, 'लंदन में छुट्टियों के समय मैंने कहानी पूरी की। फिर मैंने उसमें डांस डाला। आज की डेट में उसके जितना टैलेंटेड कोई एक्टर नहीं है। हालांकि उस समय वो एडवोकेट के रोल में, इंसपेक्टर के रोल में फिट नहीं होता था, हाइट की वजह से। लेकिन अब वो स्टार हो गया, स्टार से तो कुछ भी करवा लो।'गोविंदा के पास काम नहीं था, तो दी गई शोला और शबनम-उसी पॉडकास्ट में पहलाज निहलानी ने आगे कहा, 'गोविंदा के पास काम नहीं था, तब शोला और शबनम हमने शुरू की तो उससे पहली बार कॉमेडी रोल करवाया। फिर जब काम नहीं था उसके बाद तब फिल्म आंखें करवाई। दोनों फिल्मों में एकदम अलग रोल था।' पहलाज निहलानी ने कहा था- गोविंदा इनसिक्योर हैं-जब पहलाज निहलानी से पूछा गया कि क्या गोविंदा के नेगेटिव एटीट्यूड की वजह से कई प्रोड्यूसर और डायरेक्टर उनके साथ काम नहीं करना चाहते थे, तो इसके जवाब में उन्होंने कहा, 'जब सक्सेस मिलती है, तो आदमी हर दर्द सह लेता है, लेकिन जब सक्सेस की सीढ़ी से नीचे उतरते हैं तो तकलीफ होती है। गोविंदा में वो प्रॉब्लम शुरू से थी। क्योंकि वो खुद को इनसिक्योर मानता था।' 'उसके पिता बहुत बड़े हीरो रहे हैं महबूब खान के। बड़ी-बड़ी पिक्चरें की, अच्छे प्रोड्यूसर भी रहे, नुकसान हुआ। इसके बाद उसने इतना दर्द सहा, बहुत सारी चीजें उसके हाथ से निकल गईं, स्ट्रगल करना पड़ा। वो सारी चीजें उसके अंदर थीं। वो इनसिक्योरिटी रहती हैं। उसे था कि कहीं से पैसे आ जाएं। उसके पास भाई-बहन की जिम्मेदारियां थीं। वो पैसे में उलझा रहता था, उसे करना भी सब था।' 'इस वजह से उसका एटीट्यूड ऐसा हो गया था। जब काम और प्रेशर बहुत हो जाता है, तो आप छोड़ नहीं सकते, तो चीजें बढ़ गईं। फिर आदत बन गई, वहमी हो गया। जब नहीं चलता आदमी तो सब उसे डैमेज करते हैं, वर्ना गोविंदा जैसा हीरो ढूंढने पर नहीं मिलेगा।' दिव्या भारती को चोट लगी, तो रोक दी थी शूटिंग- पहलाज निहलानी ने दिव्या भारती के साथ फिल्म शोला और शबनम की थी। एक इंटरव्यू में उन्होंने दिव्या भारती की डेडिकेशन से जुड़ा किस्सा शेयर किया और बताया कि कैसे उन्हें दिव्या भारती की चोट के चलते एक्ट्रेस के इनकार के बावजूद शूटिंग रोकनी पड़ी थी। पहलाज निहलानी ने कहा था, 'शोला और शबनम' के दौरान हम 20 घंटे शूटिंग करते थे। हम सुबह से शूटिंग शुरू करते थे और उसके बाद बैक टू बैक सीन, फिर डांस और फिर दूसरे सीन शूट होते थे। एक दिन मुझे याद है हम ऊटी में शूट कर रहे थे और दिव्या का पैर एक कील पर पड़ गया। उन्होंने किसी को कुछ नहीं बताया।' 'मैं मॉनिटर के पास खड़ा था जब दिव्या शूट के लिए वापस आईं। उन्होंने किसी को पता नहीं चलने दिया कि उन्हें चोट लगी है। मैं भी नहीं समझ पाया फिर उन्होंने मुझसे रुमाल मांगा और अपने पैर में हुए जख्म पर बांध लिया। मैंने उनसे पूछा कि क्या हुआ तो वो कुछ नहीं बोलीं लेकिन मैंने उनके पैर से खून बहता देखा तो फिर तुरंत पैक अप करवा दिया।' इनकार के बावजूद जबरदस्ती सेट पर पहुंची थीं दिव्या भारती-आगे उन्होंने कहा था, 'पैकअप के बावजूद वो शूटिंग करने पर अड़ी रहीं, मुझसे देखा नहीं जा रहा था लेकिन इतनी चोट लगने के बावजूद उनके चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। मैंने फाइनल पैक अप किया और प्रोडक्शन वालों को इन्फॉर्म कर दिया कि अगले दिन शूटिंग नहीं होगी लेकिन दिव्या नहीं मानीं। मैंने उनकी मां को कह दिया था कि अगले दिन दिव्या को शूटिंग पर ना भेजें ताकि वो रेस्ट कर सकें। लेकिन सुबह छह बजे, दिव्या सेट पर आ गईं और हाउस-कीपिंग से चाबी लेकर मेरे पास पहुंचीं और कहा, 'चलो उठो, आप अब तक सो क्यों रहे हो'? वो अपनी वजह से शूट कैंसिल नहीं करना चाहती थीं और फिर वो शूटिंग करके ही मानीं। उनके साथ मेरी कई बेहतरीन यादें हैं।' रीटेक से झल्ला उठे धर्मेंद्र, पहलाज से कहा था- क्या मैं न्यूकमर हूं, 1987 की धर्मेंद्र स्टारर फिल्म आग ही आग को पहलाज निहलानी ने प्रोड्यूस किया था, जबकि इसके डायरेक्टर शिबू मित्रा थे। शूटिंग के दौरान धर्मेंद्र को एक सीन के लिए 15 रीटेक देने पड़े, जिससे वो चिढ़ गए और डायरेक्टर को खूब खरी खोटी सुनाई। इस फिल्म में उनके साथ शत्रुघ्न सिन्हा, नीलम कोठारी, चंकी पांडे और गुलशन ग्रोवर समेत कई एक्टर नजर आए थे। डायरेक्टर को सुनाने के बाद धर्मेंद्र ने सेट पर सबके सामने गुस्से में पहलाज निहलानी से कहा था- 'पहलाज, क्या मैं कोई न्यूकमर हूं, जो मुझसे टेक पर टेक करवा रहे हो।' 2015-17 तक सीबीएफसी के चीफ रहे, कई आरोप लगे- इसके चलते उनका कार्यकाल विवादित रहा था। जेम्स बॉन्ड सीरीज की फिल्म 'स्पेक्टर' से किसिंग सीन को छोटा कराने पर सोशल मीडिया पर उनकी खूब आलोचना हुई थी। निहलानी ने शाहिद कपूर स्टार 'उड़ता पंजाब' में कथित तौर पर 69 कट लगाने के लिए कहा था, जो काफी चर्चा में रहा था। बाद में बॉम्बे हाईकोर्ट ने सीबीएफसी के फैसले को गलत बताया और फिल्म सिर्फ एक कट के साथ रिलीज हुई थी। 2017 में सरकार ने उन्हें हटाकर गीतकार प्रसून जोशी को सीबीएफसी का नया चेयरमैन बनाया था। मूवी टिकट पर जीएसटी लगने पर कहा- इंडस्ट्री बुरे दौर से गुजर रही है-वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 2 साल पहले मूवी टिकट पर 12-18 प्रतिशत जीएसटी लगाया था। इस पर पहलाज निहलानी ने कहा था, बहुत से देशों में एंटरटेनमेंट पर टैक्स नहीं है इसलिए जीएसटी को इंडिया में भी एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री से पूरी तरह हटाना चाहिए। सरकार को ये सोचना चाहिए कि अपने कल्चर और भाषा को बचाने के लिए ज्यादा से ज्यादा फिल्में बनाने की कोशिशों को बढ़ावा दिया जाए। मौजूदा समय में जिस तरह का बिजनेस आ रहा है, उसकी वजह से अच्छे विषयों पर फिल्में नहीं बन पा रही हैं और पैसे कमाने के लिए हल्के विषयों और वल्गर कंटेंट पर फिल्में बनने की मजबूरी हो गई है। निहलानी ने आगे कहा था, फिल्में कॉमन मैन के लिए बनती हैं। छोटे से छोटा मजदूर भी जो है पिक्चर देखता है अगर जो फिल्म टिकट सस्ती हो जाए और इस पर टैक्स न लगे तो इससे सिंगल स्क्रीन सिनेमा को बूस्ट अप मिलेगा।

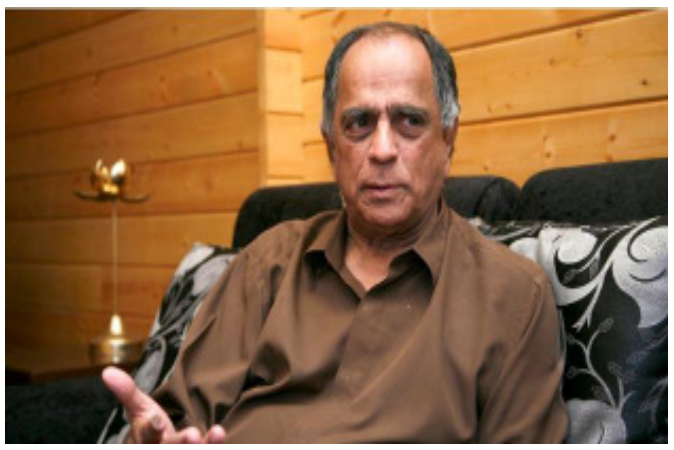

स्वत्वाधिकारी
प्रकाशक एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा श्री
आधुनिक प्रिन्टर्स
एण्ड
पैकेजर्स प्रा.लि.
1- मिर्जापुर रोड नैनी
प्रयागराज उ.प्र. 211008
से मुद्रित एवं एम2ए/25
एडीए कालोनी नैनी
प्रयागराज 211008 (उ.प्र.)
से प्रकाशित
सम्पादक
डॉ.दीपक अरोरा
मो 0 न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
website:www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।